

वक्त की कदर करो,
वर्षों एक बार गया
हुआ वक्त लौटकर नहीं
आता।

दिल्ली में जाम, प्रदूषण, दुर्घटना, और जनता को परेशानी उत्पन्न करने वाले मुख्य कारक और सरकारी विभागों की भूमिका

संजय कुमार बाठला

दिल्ली भारत देश की राजधानी पर दुनिया में आज प्रदूषण, सड़क दुर्घटनाओं, सड़कों पर जाम और असुरक्षा की चरम सीमा पर गिना जाने वाला राज्य।

क्या कभी किसी ने इस बात का विश्लेषण करने का प्रयास किया कि आखिर क्यों है भारत देश की राजधानी में यह सब चरम पर और क्या है कारण और सच्चाई में कौन है जिम्मेदार ?

माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, भारत सरकार, दिल्ली उच्च न्यायालय, दिल्ली सरकार एवं अन्य सरकारी विभागों की माने तो दिल्ली की जनता है इसकी जिम्मेदार !

और यही कारण है जब इन पर रोक लगाने के लिए कोई भी इस पर विस्तृत कार्यवाही दिखाई जाती है तो जुर्माना, हर्जाना और सजा सिर्फ और सिर्फ जनता पर लगाए जाते हैं।

क्या सच में दिल्ली की जनता ही दिल्ली के प्रदूषण दिल्ली की सड़कों पर जाम दिल्ली की सड़कों पर दुर्घटनाओं और दिल्ली में फैलती असुरक्षा का कारक है ?

अगर यह बात सही है तो सख्त से सख्त नियम कानून आदेश जारी होने के बाद भी यह नियंत्रण में क्यों नहीं ?

विश्लेषण किया जाए तो कानूनी और गैर कानूनी दोनों ही तरह से हर नियम, हर कानून और हर आदेश के जारी होने पर जनता को

अरबों खरबों का जुर्माना लगा कर राजस्व और विभागीय कार्रवाई करने वाली की तिजोरी में पहुंच जाते हैं, जो सर्वोचिंत और सब की जानकारी में है।

फिर से वही सवाल उत्पन्न होता है कि फिर इन सभी का कारक कौन ?

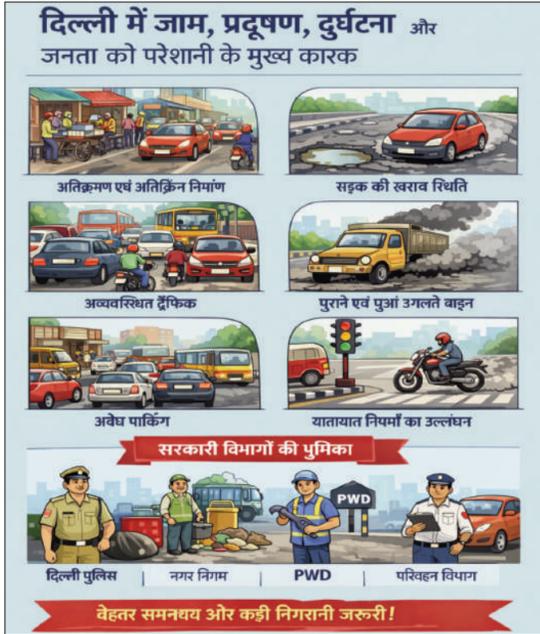
“परिवहन विशेष” द्वारा दिल्ली में करवाए गए सर्वे में जो तथ्यांक सामने आए वह जनता की आंखें खोलने वाले हैं पर शायद दिल्ली की जनता अब सरकारों द्वारा मिलने वाली प्री सेवाओं के चंगुल में इतनी बुरी तरह फंसे चुकी हैं कि अपने साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ भी गुंभी बनी रहती हैं।

दिल्ली में नए वाहन पंजीकरण के समय वाहन पंजीकरण शुल्क के साथ ही सरकार आपसे

एक मुश्त पथ कर, एक मुश्त पार्किंग शुल्क और व्यवसायिक गतिविधियों में पंजीकृत वाहनों से प्रति वाहन जांच प्रमाण पत्र जारी करने के समय जांच शुल्क के साथ पार्किंग शुल्क वसूल करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि 1. सड़कों पर चलने और प्रयोग करने हेतु वाहन मालिकों ने वाहन की उम्र (समय सीमा) पूरी होने तक का एक मुश्त पथ कर और पार्किंग शुल्क जमा करा दिया तो

1. 1- किस आधार पर दिल्ली नगर निगम



दिल्ली की सड़कों पर अवैध कब्जा करवा कर पार्किंग शुल्क के ठेके दे सकता है और जनता से पार्किंग शुल्क वसूल सकता है ?

1. 2- किस आधार पर सड़कों का प्रयोग पार्किंग के लिए उपयोग कर सड़कों पर जाम लगावा सकता है ?

1. 3- सड़कों पर अवैध रूप से अपनी वसूली/ खजाने के नाम पर सड़कों का दुरुपयोग कर जनता को परेशानी उत्पन्न कर सकता है ?

माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली द्वारा सड़कों से अवैध पार्किंग हटवाने के दिशानिर्देश अवैध राजस्व की भूख रखने वाले विभाग पर लागू नहीं होते जो वह सड़कों पर पार्किंग का ठेका देकर जनता से अवैध लूट और जनता को ही परेशानी उत्पन्न करने का प्रमुख जनक और कारक है ?

पार्किंग शुल्क के नाम पर हर साल अरबों रूपए आने के बाद भी पार्किंग स्थल उपलब्ध करके वहां पार्किंग करवाना इनका ध्येय या आवश्यकता नहीं जो माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत, दिल्ली उच्च न्यायालय अपने ही दिशानिर्देशों को दरकिनार करते स्पष्ट रूप में देखने के बाद भी इन के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहे।

2. दिल्ली की सड़कों पर अवैध कब्जा करवाने और सड़कों पर जाम लगवाने वह भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत और उच्च न्यायालय दिल्ली के दिशा निर्देशों को दरकिनार करने वाला दूसरा प्रमुख विभाग है दिल्ली पुलिस और दिल्ली यातायात पुलिस।

वाहन नियम अधिनियम के तहत अनिवार्य परमिट से छूट है पर दिल्ली परिवहन विभाग वाहन निर्माता को स्टेट अप्रुव और दिल्ली में वाहन बिक्री के लिए डीलर को ट्रेड सर्टिफिकेट जारी कर इजाजत दे रहा है पर ई वाहन को व्यावसायिक श्रेणी में अलग अलग बहाने बनाकर पंजीकृत नहीं कर रहा आज तक, और साथ ही जनता के पुराने समय सीमा पूरे हो चुके वाहनों को बलपूर्वक उतवाकर अपने उन प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरों को स्क्रैप करने के लिए सौंप रहा है जिससे उम्मीद कम है कि वाहन स्क्रैप होगा और स्क्रैप मूल्य प्राप्त होगा।

अब आप सभी सच्चाई समझ गए होंगे कि दिल्ली परिवहन विभाग कैसे दिल्ली में निजी और व्यवसायिक श्रेणी में ई वाहनों को खुद ही आने से रोक रहा है।

दिल्ली परिवहन विभाग, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली पुलिस राजस्व इजाफा और निजी फायदों के लिए जिन्हें अवैध को हटाने का मुख्य कार्य नियमों के अंतर्गत सुपूर्द है अगर वही अवैध के जिम्मेदार हो तो कैसे कभी भी दिल्ली की सड़कों दुर्घटना मुक्त, जाम मुक्त हो सकती है और कैसे वायु गुणवत्ता बेहतर की उम्मीद दिल्ली में की जा सकती है, बड़ा सवाल ?

आम आदमी गलती से भी या जरूरत पर सड़क शुल्क, और पार्किंग शुल्क देने के बाद भी सड़क पर वाहन खड़ा कर दे तो

1. दिल्ली नगर निगम उठाकर ले जाते हैं।

2. दिल्ली यातायात पुलिस उठाकर ले जाते हैं।

3. दिल्ली पुलिस भी अपने कब्जे में लावारिस बता कर उठा ले जाते हैं

“और जुर्माना और उठाने का शुल्क वसूलने के बाद ही छोड़ते हैं”

पर इन मुख्य विभागों जिनका मुख्य कार्य ही अवैध को हटवाना और सड़कों को यातायात के प्रति खाली बनवाए रखना है द्वारा जो अवैध पार्किंग, अवैध ठेकेदार छोड़े गए हैं उनको शुल्क देने के बाद सब अवैध से वैध हो जाता है अब

1. माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत

2. माननीय उच्च न्यायालय

3. माननीय एनजीटी

4. वायु गुणवत्ता आयोग

5. उपराज्यपाल दिल्ली

कृपया जनता को बताएं कि किस प्रकार आप दिल्ली की सड़कों को

1. दुर्घटना मुक्त

2. जाम मुक्त

3. सुरक्षित और

4. दिल्ली की वायु गुणवत्ता सुधारने का दावा कर जनता पर ही एक और आदेश जारी कर विश्वास दिलाया चाहते हैं ?

जब की मुख्य कारकों और कारणों के स्वयं अवैध करने और करवाने में सीधे या अनजाने तौर पर मददगार बन रहे हैं।

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

<https://tolwa.com/about.html> | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार



साइबर सुरक्षा ही राष्ट्रीय सुरक्षा है MuddyWater, एक ईरानी राज्य-प्रायोजित साइबर जासूसी समूह, मध्य पूर्व में डिजिटल युद्धक्षेत्र को सक्रिय रूप से प्रभावित कर रहा है। यह सरकार, रक्षा, दूरसंचार और ऊर्जा क्षेत्रों को निशाना बनाकर अस्थिरता बढ़ाता है, संस्थानों पर भरोसा कमजोर करता है, महत्वपूर्ण ढाँचों को बाधित करता है और भू-राजनीतिक तनाव को बढ़ावा देता है।

MuddyWater कौन है ?

- अन्य नाम: Earth Vetala, Mango Sandstorm, MUDDYCOAST, TA450

- संबंध: माना जाता है कि यह ईरान के Ministry of Intelligence and Security (MOIS) के अधीन कार्य करता है।

- सक्रियता: कम से कम 2017 से, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका तक फैली गतिविधियाँ।

- मुख्य लक्ष्य: ईरानी रणनीतिक हितों के अनुरूप साइबर जासूसी, व्यवधान और प्रभाव संचालन।

मध्य पूर्व संघर्ष में प्रभाव

- महत्वपूर्ण ढाँचे पर हमला: दूरसंचार, तेल और गैस, तथा रक्षा संगठनों पर हमले कर संघर्ष क्षेत्रों में क्षमता कमजोर करना।

- मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक असर: सरकारी नेटवर्क में संचलन का जनता का भरोसा कम करना और राज्य की क्षमता पर संदेह पैदा करना।

- भू-राजनीतिक दबाव बढ़ाना: साइबर हमले पारंपरिक युद्ध को पूरक बनाते हैं, बिना सीधे सैन्य टकराव के विरोधियों को अस्थिर करते हैं।

- हालिया अभियान (2026):

o Operation Olampo: MENA संगठनों को GhostFetch, HTTP_VIP, और CHAR (Rust बैकडोर) जैसे मैलवेयर से निशाना बनाया।

o GhostBackDoor Implant: GhostFetch के माध्यम से डाला गया, जिससे दीर्घकालीन निगरानी और डेटा चोरी संभव हुई।

उपकरण और तकनीक

- मैलवेयर शस्त्रागार: GhostFetch, HTTP_VIP, CHAR, GhostBackDoor

- ईप्रोस्ट्रक्चर: लगातार बदलते डोमेन और सर्वर ताकि पहचान से बचा जा सके।

- रणनीति: o दुर्भावपूर्ण अटैचमेंट वाले स्पीयर-फिशिंग ईमेल

o रिमोट मॉनिटरिंग और मैनेजमेंट टूल का दुरुपयोग

o बैकडोर तैनात कर दीर्घकालीन जासूसी और निर्यात

जोखिम और सबक

- हाइब्रिड युद्ध: साइबर हमले अब मध्य पूर्व के आधुनिक संघर्ष का अभिन्न हिस्सा हैं।

- नागरिकों पर असर: दूरसंचार और ऊर्जा क्षेत्रों पर हमले सीधे आम नागरिकों को प्रभावित करते हैं।

- वैश्विक फैलाव: MuddyWater

के अभियान यूरोप और एशिया तक फैल चुके हैं, जिससे इसका दायरा मध्य पूर्व से बाहर भी है।

देशों के लिए सीख

- साइबर सुरक्षा = राष्ट्रीय सुरक्षा: राष्ट्रों को सैन्य सिद्धांत में साइबर रक्षा को शामिल करना चाहिए।

- हाइब्रिड खतरे की तैयारी: एक साथ गलत सूचना, जासूसी और ढाँचे में व्यवधान की संभावना को ध्यान में रखना।

- संस्थागत मजबूती: सरकारी नेटवर्क सुरक्षित करना और पारदर्शिता से जनता का भरोसा बनाए रखना।

वैश्विक सहयोग: सीमाओं के पार खुफिया जानकारी साझा कर evolving मैलवेयर का पता लगाना।

- जन-जागरूकता: नागरिकों को फिशिंग, डीपफेक और गलत सूचना अभियानों के बारे में शिक्षित करना।

रणनीतिक निष्कर्ष

MuddyWater केवल एक साइबर अपराध समूह नहीं है—यह एक राज्य-प्रायोजित Advanced Persistent Threat (APT) है जो मध्य पूर्व के युद्ध वातावरण को आकार दे रहा है। इसका प्रभाव अस्थिरता बढ़ाने, विरोधियों को कमजोर करने और ईरान की रणनीतिक पहुंच को विस्तारित करने में है।

यह दिखाता है कि साइबर अभियान पारंपरिक युद्ध को पूरक बनाते हैं—बिना गोली चलाए विरोधियों को कमजोर करते हैं। राष्ट्रों को उन हाइब्रिड खतरों के लिए तैयार रहना चाहिए जहाँ गलत सूचना, जासूसी और ढाँचे में व्यवधान एक साथ होते हैं।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

“सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा”

आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करें, यह बिल्कुल निशुल्क है, अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करें

<https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9>

मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा के जनहित कार्यों को समर्पित



सड़क सुरक्षा



महिला सुरक्षा



प्रदूषण



साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है, तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुल्क आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001



आवेदन प्रक्रिया

<https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9>

मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

सौगात, पिक-मजेटा लाइन के नए मेट्रो कॉरिडोर शुरू; 3 का शिलान्यास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुराड़ी में 33,500 करोड़ रुपये की मेट्रो और आवास परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया। उन्होंने पिक और मजेटा लाइन के नए कॉरिडोर शुरू किए और तीन नए मेट्रो कॉरिडोर की आधारशिला रखी। सरोजनी नगर में 2500 प्लेटों का भी उद्घाटन किया गया।



नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को बुराड़ी स्थित डीडीए ग्राउंड में रविवार को 33,500 करोड़ की परियोजनाओं की सौगात दी। पिक व मजेटा लाइन के नए कॉरिडोर की शुरुआत करने के साथ ही तीन नए मेट्रो कॉरिडोर का शिलान्यास किया। यहां दिल्ली भाजपा की 42 महिला मंडल अध्यक्षों ने उनका स्वागत किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने पिक लाइन पर नवनिर्मित मजलिस पार्क-मौजपुर कॉरिडोर और मजेटा लाइन पर दीपाली चौक-मजलिस पार्क कॉरिडोर के निर्माण और उससे होने वाले लाभ के बारे में जानकारी प्राप्त की।

केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल और दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंच पर उनका स्वागत किया।

महिला दिवस पर मेट्रो परियोजनाओं की सौगात

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रधानमंत्री स्वयं पहुंचकर न सिर्फ महिलाओं को अपना आशीर्वाद दे रहे हैं, बल्कि 18 हजार करोड़ रुपये से अधिक की मेट्रो परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि मेट्रो महिलाओं के आवागमन का प्रमुख साधन है और दो कॉरिडोर के उद्घाटन से करावल नगर, भजनपुरा सहित अन्य क्षेत्रों को लाभ मिलेगा। साथ ही तीन नए कॉरिडोर का शिलान्यास भी दिल्ली के विकास को गति देगा।

दिल्ली सरकार के एक वर्ष के कामकाज गिनाए

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार ने एक वर्ष पूरा किया है और प्रधानमंत्री से मिले मेहनत और ईमानदारी के मंत्र के आधार पर दिल्ली की सेवा करने का प्रयास किया गया है। उन्होंने कहा कि आयुष्मान योजना और कूड़े के पहाड़ हटाने जैसे कार्यों को प्राथमिकता दी गई।

सबका साथ, सबका विकास के मंत्र से प्रेरित होकर 70 अंतरिम कैंटिन शुरू किए गए हैं, जहां प्रतिदिन करीब 70 हजार लोग मात्र पांच रुपये में भोजन प्राप्त कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि 50 वर्ष बाद दिल्ली के लिए नया मास्टर ड्रेनेज प्लान लाया गया है। मेरी पूंजी मेरा अधिकार के तहत 70 हजार बेटियों को लाडली योजना में पड़े 200 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया।

पिछली सरकारों के समय शुरू हुई योजना का लाभ लाभार्थियों तक नहीं पहुंच पाया था। प्रधानमंत्री की पारदर्शिता की प्रेरणा से सभी विभागों में डिजिटाइजेशन किया गया और स्कूलों में 70 हजार स्मार्ट क्लास शुरू किए गए हैं।

वर्षों से अटकी, लटकी और भटकी हुई योजनाओं का समाधान किया जा रहा है।

33,500 करोड़ की मेट्रो और आवास परियोजनाओं का उद्घाटन

प्रधानमंत्री ने करीब 33,500 करोड़ रुपये की लागत से मेट्रो और सरकारी आवास परियोजनाओं का उद्घाटन किया। उन्होंने पिक लाइन पर 12.3 किलोमीटर लंबे मजलिस पार्क से

मौजपुर-बाबरपुर कॉरिडोर का उद्घाटन किया। इसके साथ ही मजेटा लाइन पर 9.9 किलोमीटर लंबे कॉरिडोर का भी उद्घाटन किया।

इन कॉरिडोर के शुरू होने से बुराड़ी, जगतपुर, वजीराबाद, खजूरी खास, भजनपुरा, यमुना विहार, मधुबन चौक, हैदरपुर, बादली, भलसा और मजलिस पार्क क्षेत्रों में मेट्रो कनेक्टिविटी बेहतर होगी।

तीन नए मेट्रो कॉरिडोर का शिलान्यास

प्रधानमंत्री ने केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मेट्रो फेज-5 (ए) के अंतर्गत दिसंबर में स्वीकृत तीन नए कॉरिडोर का शिलान्यास भी किया। इनमें आरके आश्रम मार्ग से इंद्रप्रस्थ, एरोसिटी से आईजीआई एयरपोर्ट टर्मिनल-1 और तुगलकाबाद से कालिंदी कुंज कॉरिडोर शामिल हैं।

इनकी कुल लंबाई 16.10 किलोमीटर है। इन कॉरिडोर के निर्माण से फरीदाबाद, नोएडा और दक्षिणी दिल्ली से एयरपोर्ट तक पहुंचना आसान हो जाएगा।

देश में तेजी से बढ़ा मेट्रो नेटवर्क

केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि यह दिल्लीवासियों के लिए महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि प्रधानमंत्री कई बड़ी योजनाएं समर्पित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि सरोजनी नगर में ढाई हजार प्लेटों का उद्घाटन किया गया है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

“निधन/मृत्यु के अज्ञात कारण (Cause of death is Unknown Etiology)” के पीछे छिपी महामारी

असुरक्षित भोजन, मिलावटी पेय पदार्थ और अवैध शराब: आधुनिक जनस्वास्थ्य परिदृश्य की एक गंभीर चुनौती आधुनिक जनस्वास्थ्य संकेतों की छाया में एक अत्यंत चिंताजनक किंतु प्रायः अनदेखी रहने वाली महामारी निरंतर फैलती जा रही है। अनेक समाजों में—विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में—लाखों लोग प्रतिदिन सस्ते सड़क किनारे मिलने वाले खाद्य पदार्थ, मिलावटी शीतल पेय और अवैध रूप से निर्मित शराब का सेवन करते हैं। ये वस्तुएँ देखने में साधारण और आकर्षक प्रतीत होती हैं, परंतु इनमें अक्सर विषैले रसायन और खतरनाक सूक्ष्मजीव छिपे होते हैं, जो अनजाने में शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

इसके परिणाम अत्यंत विनाशकारी हो सकते हैं। पीड़ित व्यक्तियों में गंभीर जठरांत्र रोग, तंत्रिका तंत्र की क्षति, युक्त (लिवर) विफलता, गुदों की क्षति और कई अंगों के एक साथ निष्क्रिय होने जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

फिर भी अनेक मामलों में मृत्यु का वास्तविक कारण स्पष्ट नहीं हो पाता।

सीमित चिकित्सीय इतिहास, आपस में मिलते-जुलते लक्षणों और पर्याप्त जांच सुविधाओं के अभाव के कारण चिकित्सकों को प्रायः मृत्यु प्रमाण पत्र में “अज्ञात कारण (Unknown Etiology)” लिखने के लिए विवश होना पड़ता है।

यह शब्द किसी प्रकार की चिकित्सीय लापरवाही या जिम्मेदारी से बचने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह विषाक्त पदार्थों के जटिल

प्रभावों तथा जनस्वास्थ्य व्यवस्था, फॉरेंसिक जांच और निगरानी प्रणाली में मौजूद कमियों की वास्तविकता को दर्शाता है।

तीन प्रमुख खतरनाक स्रोत 1. अस्वच्छ स्ट्रीट फूड और दूधित नारने भारत सहित अनेक देशों में सड़क किनारे मिलने वाला भोजन सामाजिक और आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे लाखों लोगों को रोजगार मिलता है और बड़ी संख्या में लोगों को सस्ता भोजन उपलब्ध होता है।

किन्तु स्वच्छता की कमी, अनुचित भंडारण और दूधित पानी के उपयोग के कारण यही भोजन कई बार गंभीर बीमारियों का कारण बन जाता है।

अस्वच्छ वातावरण में तैयार भोजन में कई प्रकार के खतरनाक सूक्ष्मजीव पाए जा सकते हैं, जैसे:

Escherichia coli
Salmonella
Campylobacter
Leptospira
Vibrio
ये सूक्ष्मजीव तीव्र गैस्ट्रोएंट्राइटिस उत्पन्न कर सकते हैं, जिसके लक्षण हैं:

तेज दस्त, उल्टी, पेट दर्द और गंभीर निर्जलीकरण। गंभीर परिस्थितियों में संक्रमण रक्त में फैलकर सेप्टीसीमिया का रूप ले सकता है, जो जानलेवा हो सकता है।

E. coli की कुछ विशेष प्रजातियाँ हीमोलिटिक यूरैमिक सिंड्रोम उत्पन्न करती हैं, जिसमें गुदों की विफलता, एनीमिया और प्लेटलेट्स की कमी हो जाती है।

बार-बार दूधित भोजन के सेवन से आंतों में दीर्घकालिक सूजन, आंतों की सुरक्षा प्रणाली में कमजोरी और प्रतिरक्षा प्रणाली में विकार भी उत्पन्न हो सकते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार असुरक्षित भोजन के कारण हर वर्ष विश्वभर में करोड़ों लोग खाद्यजनित रोगों से प्रभावित होते हैं। यह समस्या विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों में अधिक गंभीर है।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह खतरा केवल गरीब या वंचित वर्ग तक सीमित नहीं है; कई बार शिक्षित और संपन्न परिवारों के लोग भी अनजाने में दूधित भोजन का सेवन कर लेते हैं।

2. मिलावटी शीतल पेय और रासायनिक रूप से दूधित पेय पदार्थ दूसरा महत्वपूर्ण खतरा मिलावटी शीतल पेय और आइसक्रीम जैसे उत्पादों से जुड़ा हुआ है।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की जांचों में कई अनियमित उत्पादन इकाइयों में अत्यंत चिंताजनक कुप्रथाएँ सामने आई हैं। कुछ मामलों में उत्पादों की बनावट सुधारने या लागत कम करने के लिए उनमें डिटजेंट पाउडर, कृत्रिम झाग उत्पन्न करने वाले रसायन और अत्यधिक फॉस्फोरिक एसिड मिलाया जाता पाया गया है।

ये पदार्थ मानव शरीर के लिए बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं हैं। इनके सेवन से निम्न समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं:

दाँतों के इनेमल का क्षरण
कैल्शियम-फॉस्फोरस संतुलन में गड़बड़ी
गुदों की पथरी
ऑस्टियोपोरोसिस
भारी धातुओं का संचय
कृत्रिम रंगों और रसायनों से



कैंसर का संभावित खतरा इसके अतिरिक्त, अस्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया के कारण पेय पदार्थों में बैक्टीरिया और फंगस भी विकसित हो सकते हैं।

इस प्रकार जो पेय पदार्थ ताजगी देने वाला प्रतीत होता है, वह वास्तव में विषैले रसायनों और सूक्ष्मजीवों का स्रोत बन सकता है।

3. अवैध शराब: सबसे घातक खतरा इन सभी खतरों में सबसे अधिक घातक है अवैध रूप से निर्मित शराब का सेवन।

ऐसी शराब—जिसे आम भाषा में “हूच” कहा जाता है—अक्सर गुप्त स्थानों पर अत्यंत असुरक्षित और अवैज्ञानिक तरीकों से बनाई जाती है।

इसकी तीव्रता बढ़ाने और लागत कम करने के लिए इसमें कई बार औद्योगिक मेथेनॉल मिला दिया जाता है।

मेथेनॉल अत्यंत विषैला रसायन है। शरीर में प्रवेश करने के बाद यह फॉर्मलडिहाइड और फॉर्मिक एसिड में परिवर्तित हो

जाता है, जो गंभीर जैव रासायनिक विकार उत्पन्न करते हैं।

इसके प्रमुख दुष्प्रभाव हैं: गंभीर मेटाबोलिक एसिडोसिस ऑप्टिक नर्व की क्षति जिससे स्थायी अंधापन हो सकता है केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का अवसाद श्वसन विफलता बहु-अंग विफलता प्रारंभिक लक्षण सामान्य शराब के नशे जैसे लग सकते हैं—जैसे हल्का उतावरा, चक्कर, मतली और उल्टी।

लोकन बाद में रोगी में दृष्टि धुंधली होना, तेज सांस चलना, दौरे पड़ना और अंततः कोमा जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन लक्षणों की समानता के कारण इसे कई बार डायबिटिक कीटोएसिडोसिस या वायरल एन्सेफलाइटिस जैसी अन्य बीमारियों से भ्रमित किया जा सकता है।

निदान की जटिल चुनौती ऐसे मामलों में मृत्यु का

वास्तविक कारण निर्धारित करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

इसके पीछे कई कारण हैं:

1. अपूर्ण रोग-इतिहास सामाजिक बदनामी के भय से कई लोग शराब सेवन की जानकारी छिपा लेते हैं, विशेषकर उन राज्यों में जहाँ शराब पर प्रतिबंध है।

2. लक्षणों की समानता दूधित भोजन से होने वाले लक्षण कई बार मेथेनॉल विषाक्तता के प्रारंभिक लक्षणों से मिलते-जुलते होते हैं।

3. जांच सुविधाओं का अभाव मेथेनॉल जैसे विषों की पहचान के लिए आवश्यक उन्नत परीक्षण—जैसे गैस क्रोमैटोग्राफी—मास स्पेक्ट्रोमेट्री (GC-MS)—अक्सर छोटे अस्पतालों या ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं होते।

4. चिकित्सालय में देर से पहुँचना अनेक रोगी गंभीर अवस्था में ही अस्पताल पहुँचते हैं, जब शरीर के कई अंग पहले ही प्रभावित हो चुके होते हैं।

5. अन्य सहवर्ती बीमारियाँ कुपोषण, मधुमेह और दीर्घकालिक संक्रमण जैसी समस्याएँ भी रोग की पहचान को और जटिल बना देती हैं।

इन परिस्थितियों में चिकित्सकों को मृत्यु प्रमाण पत्र में “कार्डियो-रेस्पिरैटरी फेल्योर: अज्ञात कारण” लिखना पड़ सकता है।

हाल के घटनाक्रम और बढ़ती जागरूकता (2025–2026) पिछले कुछ वर्षों में मिलावटी खाद्य पदार्थों और अवैध शराब से होने वाली घटनाओं ने सरकारों और समाज का ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर आकर्षित किया है।

मार्च 2026 में पंजाब के अमृतसर क्षेत्र में संदिग्ध अवैध शराब से कई लोगों की मृत्यु हुई और अनेक लोग अस्पताल में भर्ती हुए। ऐसी घटनाएँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर सामने आती रही हैं।

इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने हाल के वर्षों में कई कठोर कदम उठाए हैं, जैसे:

खाद्य पदार्थों में रसायनों और मिलावट पर कड़े मानक पेय पदार्थ एवं डेयरी इकाइयों की सघन जांच मोबाइल फूड टेस्टिंग प्रयोगशालाएँ छोटे निर्माताओं की निगरानी मिलावट करने वालों के लिए भारी आर्थिक दंड और लाइसेंस रद्द करना

इसके साथ ही वैज्ञानिक प्रगति भी इस दिशा में सहायक बन रही है। शोधकर्ता अब ऐसे पोर्टेबल मेथेनॉल डिटेक्टर, स्मार्टफोन आधारित सेंसर और त्वरित

रोगजनक पहचान किट विकसित कर रहे हैं, जो भविष्य में खाद्य सुरक्षा की निगरानी को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

आगे का मार्ग “अज्ञात कारण” से होने वाली मौतों को केवल चिकित्सीय रहस्य मानकर अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह वास्तव में जनस्वास्थ्य प्रणाली के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

इस समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है:

खाद्य सुरक्षा कानूनों का कठोर पालन अवैध शराब के नेटवर्क पर सख्त नियंत्रण

फॉरेंसिक और विष विज्ञान प्रयोगशालाओं का विस्तार जनजागरूकता कार्यक्रम खाद्यजनित और रासायनिक विषाक्तता की बेहतर निगरानी सबसे महत्वपूर्ण है समाज को जागरूक बनाना ताकि लोग अपने भोजन और पेय पदार्थों के चयन में अधिक सावधानी बरत सकें।

निष्कर्ष “अज्ञात कारण” के रूप में दर्ज होने वाली अनेक मौतों के पीछे असुरक्षित भोजन, मिलावटी पेय पदार्थ और अवैध शराब का जटिल संबंध छिपा हुआ होता है।

ये समस्याएँ हमारे खाद्यतंत्र और जनस्वास्थ्य व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर करती हैं। यदि वैज्ञानिक-नीतियों, तकनीकी नवाचार और जनजागरूकता के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना किया जाए, तो अनेक रोगी जा सकने वाली मौतों को टाला जा सकता है।

दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से हम उस दर्द को हटा सकते हैं जो आज अनेक मौतों के वास्तविक कारण का छिपा हुआ है—और भविष्य में अनिर्णयित जीवन बचा सकते हैं।

लिवर खराब होने से पहले नजर आने वाले लक्षण



लिवर खराबी की पहचान कैसे करें?

पिकी कुंडू

हमारे शरीर में किसी भी बीमारी की शुरुआत अचानक नहीं होती। बीमारी होने से पहले शरीर बार-बार इसके संकेत देता है। अगर समय रहते इन संकेतों को पहचान लिया जाए तो बीमारी से बचा जा सकता है। ऐसे ही लिवर भी खराब होने से पहले कई तरह के लक्षण दिखाई देते हैं। आज हम आपको आपके पैरों में दिखने वाले वे 7 लक्षण बताएंगे, जो लिवर डैमेज होने का संकेत हो सकते हैं। समय रहते डॉक्टर को दिखाने से बड़ी बीमारी से बचा जा सकता है।

लिवर और पैरों का संबंध लिवर हमारे शरीर का एक बेहद महत्वपूर्ण अंग है, लेकिन जब लिवर ठीक तरह से काम नहीं करता तो इसके कुछ संकेत पैरों में दिखाई देते हैं, जिसे आमतौर पर पैरों में होने वाले बदलावों को मामूली बात मानकर नजरअंदाज करना आसान है। हम सोचते हैं कि शायद यह खराब जूते पहनने या लंबे समय तक खड़े रहने के कारण

हो सकता है, लेकिन कभी-कभी, ये बदलाव आंतरिक समस्या पैदा कर सकते हैं। विशेष रूप से लिवर स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं को, नजरअंदाज नहीं करना चाहिए बल्कि फौरन डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

इन लक्षणों को नजरअंदाज न करें:-

पैरों में अचानक सूजन आना: अगर आपके तलवों में अचानक सूजन दिखाई देने लगे तो यह लिवर की समस्या का संकेत हो सकता है। लिवर सही तरीके से काम न करने पर शरीर में तरल पदार्थ जमा होने लगता है जिससे पैरों में सूजन आ जाती है।

तलवों में ज्यादा खुजली होना: जब लिवर ठीक से काम नहीं करता तो शरीर में कुछ पदार्थ जमा हो जाते हैं, जिससे त्वचा में खुजली होने लगती है। पैरों का रंग बदलना: अगर पैरों की त्वचा का रंग पीला, गहरा या असाभ्यास दिखने लगे तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। कई

बार यह शरीर में बिलीरुबिन बढ़ने का संकेत हो सकता है।

नसों ज्यादा उभरना: कभी कभी पैरों की नसों ज्यादा उभरी हुई दिखाई देने लगती हैं और इसके साथ सूजन और दर्द भी हो तो एक तरह से ये भी लिवर से जुड़ी समस्याओं का एक संकेत हो सकता है।

लगातार दर्द या भारीपन होना: यह भी शरीर के अंदर किसी समस्या की ओर इशारा करता है। जब पैरों में लगातार दर्द, भारीपन या थकान महसूस हो रही हो तो यह भी लिवर की बीमारी का एक संकेत हो सकता है।

पैरों में हद से ज्यादा जलन होना: जब यह समस्या लंबे समय तक बनी रहे तो यह भी लिवर की खराबी का एक संकेत हो सकता है। कई लोगों को पैरों के तलवों में जलन या गर्माहट महसूस होने लगती है।

चमड़ी का बहुत ज्यादा सूखना: अगर पैरों की चमड़ी बहुत ज्यादा सूखी या फटने लगे तो यह भी किसी गड़बड़ी का संकेत हो सकता है।

अल्सर

पिकी कुंडू

अल्सर का शाब्दिक अर्थ होता है – घाव, हाइपर एंजिडिटी होना अल्सर का प्रथम चरण है, कभी भी एंजिडिटी को इग्नोर न करे। यदि आपको बार-बार या लगातार आमाशय या पेट में दर्द हो तो अपने चिकित्सक की सलाह अवश्य लें क्योंकि अक्सर यही अल्सर के लक्षण होते हैं। अन्य लक्षणों में मितली आना, उल्टी आना, गैस बनना, पेट फूलना, भूख न लगना और वजन में गिरावट शामिल हैं।

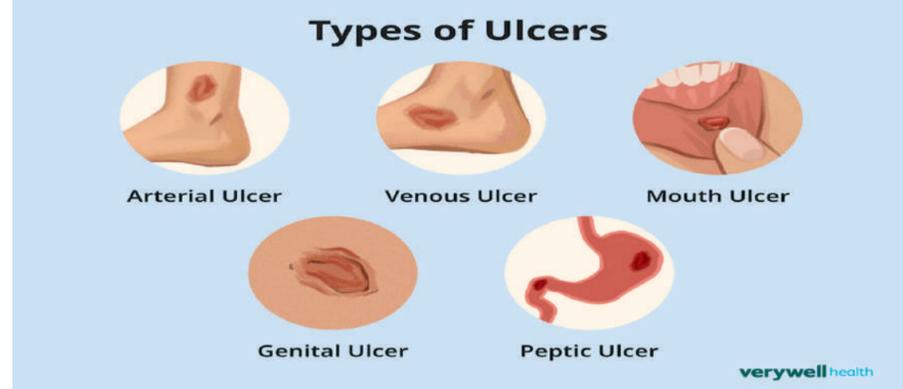
यह शरीर के भीतर कहीं भी हो सकता है; जैसे – मुंह, आमाशय, आंतों आदि में। परन्तु अल्सर शब्द का प्रयोग प्रायः आंतों में घाव या फोड़े के लिए किया जाता है। यह एक घातक रोग है, लेकिन उचित आहार से अल्सर एक-दो सप्ताह में ठीक हो सकता है।

अधिक मात्रा में चाय, कॉफी, शराब, खट्टे व गरम पदार्थ, तीखे तथा जलन पैदा करने वाली चीजें, मसाले वाली वस्तुएँ आदि खाने से प्रायः अल्सर हो जाता है। इसके अलावा अम्लयुक्त भोजन, अधिक चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, कार्यभार का दबाव, शीघ्र काम निपटाने का तनाव, बेचैनी आदि से भी अल्सर बन जाता है।

पेट में हर समय जलन होती रहती है। खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं। सिर चकराता है और खाना-पिना वमन के द्वारा निकल जाता है। पित्त जल्दी-जल्दी बढ़ता है। भोजन में अरुचि हो जाती है। कब्ज रहता है। जब रोग बढ़ जाता है तो मल के साथ खून आना शुरू हो जाता है। पेट की जलन छाती तक बढ़ जाती है। शरीर कमजोर हो जाता है और मन बुझा-बुझा सा रहता है। रोगी चिड़चिड़ा हो जाता है। वह बात-बात पर क्रोध प्रकट करने लगता है।

अगर अल्सर का समय पर इलाज न करे तो बड़ा रूप ले सकता है। अल्सर कई प्रकार का होता है।

1. आमाशय का अल्सर,
 2. पेटिक अल्सर या
 3. गैस्ट्रिक अल्सर।
- अल्सर उस समय बनते हैं जब खाने को पचाने वाला अम्ल आमाशय की दीवार को क्षति पहुंचाता है, ये एसिड इतना खतरनाक होता है कि इसकी तीव्रता आप इस से लगा सकते हैं कि पेट में बनने वाला ये एसिड लोहे के ब्लेड को भी गलने



की क्षमता रखता है। पोषण की कमी, तनाव और लाइफ-स्टाइल को अल्सर का प्रमुख कारण माना जाता था।

पोहा अल्सर के लिए बहुत फायदेमंद घरेलू नुस्खा है, इसे बिटन राइस भी कहते हैं। पोहा और सौंफ को बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बना लीजिए, 20 ग्राम चूर्ण को 2 लीटर पानी में सुबह घोलकर रखिए, इसे रात तक पूरा पी जाएं। यह घोल नियमित रूप से सुबह तैयार करके दोपहर बाद या शाम से पीना शुरू कर दें। इस घोल को 24 घंटे में समाप्त कर देना है, अल्सर में आराम मिलेगा।

पत्ता गोभी और गाजर को बराबर मात्रा में लेकर जूस बना लीजिए, इस जूस को सुबह-शाम एक-एक कप पीने से पेटिक अल्सर के मरीजों को आराम मिलता है।

अल्सर के मरीजों के लिए गाय के दूध से बने घी का इस्तेमाल करना फायदेमंद होता है। गाय के दूध में एक चम्मच हल्दी डाल कर निल्य पीने से 3 से 6 महीने में कैन्सरा भी अलसर हो, निल्य होते देखा गया है।

अल्सर के मरीजों को बादाम का सेवन करना चाहिए, बादाम पीसकर इसका दूध बना लीजिए, इसे सुबह-शाम पीने से अल्सर ठीक हो जाता है। सहजन (ड्रम स्टिक) के पत्ते को पीसकर दही के साथ पेस्ट बनाकर लें। इस पेस्ट का सेवन दिन में एक बार करने से अल्सर में फायदा होता है।

आंतों का अल्सर होने पर हींग को पानी में मिलाकर इसका एनीमा देना चाहिये, इसके साथ ही रोगी को आसानी से पचने वाला खाना चाहिए। अल्सर होने पर एक पाव ठंडे दूध में उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर देना चाहिए, इससे कुछ दिनों में आराम मिल जायेगा।

छाछ की पतली कढ़ी बनाकर रोगी को रोजाना देनी चाहिये, अल्सर में मक्की की रोटी और कढ़ी खानी चाहिए, यह बहुत आसानी से पच जाती है।

कच्चे केले की सब्जी बनाकर उसमें एक चुटकी हींग मिलाकर खाएं। यह अल्सर में बहुत फायदा करती है।

अत्यधिक रेशेदार ताजे फल और सब्जियों का सेवन करें जिससे कि अल्सर होने की सम्भावना कम की जा सके या उपस्थित अल्सर को ठीक किया जा सके।

मुलेठी बहुत गुणकारी औषधि है। मुलेठी के प्रयोग करने से न सिर्फ आमाशय के विकार बल्कि गैस्ट्रिक अल्सर के लिए फायदेमंद है। मुलेठी का चूर्ण इयूओडनल अल्सर के अपच, हाइपर एंजिडिटी आदि पर लाभदायक प्रभाव डालता है। साथ ही अल्सर के घावों को भी तेजी से भरता है। यह मीठा होता है इसलिए इसे ज्येष्ठीमधु भी कहा जाता है। असली मुलेठी अंदर से पीली, रेशेदार एवं हल्की गंधवाली होती है। कोई भी समस्या न हो तो भी कभी-कभी मुलेठी का सेवन कर लेना चाहिए आंतों के अल्सर, कैंसर का खतरा कम हो जाता है।

पालक विभिन्न उदर रोगों में लाभ प्रद है। आमाशय के घाव छाले और आंतों के अल्सर में भी पालक का रस लाभ प्रद है। कच्चे पालक का रस आधा गिलास निल्य पीते रहने से कब्ज-नाश होता है। पायरिया रोग में कच्ची पालक खूब चबाकर खाना और पत्ते का रस पीना हितकर है। नारियल पानी बहुत बढ़िया है, आप इसको निरंतर हर रोज पीजिये।

सुबह खाली पेट तुलसी के 5 पत्ते खाए। गेहूँ के जवारों का रस अमृत सामान है, अल्सर के रोगियों के लिए। रोज सुबह इसका सेवन करें, अधिक जानकारी के लिए हमारी ये पोस्ट जरूर पढ़ें।

रात को सोने से पहले एक चम्मच अर्जुन की छाल को 250 मिली पानी में पकाये, इसमें आधा चम्मच मुलेठी का चूर्ण भी डाल लें और आधा रहने पर इसको छान कर पी लें। ये महीने तक करें। अल्सर के लिए विशेष चूर्ण। आंवला 100

ग्राम, मिश्री 500 ग्राम, सौंफ 100 ग्राम, मुलेठी 100 ग्राम, हरड़ 50 ग्राम, अजवायन 50 ग्राम, धनिया 50 ग्राम, जीरा 50 ग्राम, हींग 5 ग्राम।

इन सब को मिस्र कर के एक चम्मच गाय के दूध से बनी हुयी दही की छाछ से नियमित सुबह और शाम को लें। 3 महीने निरंतर लें। आपको बहुत फायदा होगा।

मरीज को हर दो घंटे में कुछ न कुछ खाने रहना चाहिए।

मरीज को इनसे परहेज करना चाहिए। कॉफी और कार्बोनेटेड पेय पदार्थों की संख्या सीमित करें या पूर्णतः समाप्त कर दें। इन सभी पेय पदार्थों का आमाशय की अम्लीयता में तथा अल्सर के लक्षणों को गंभीर बनाने में सहभागिता होती है।

अपने अल्सर पूर्णतः ठीक होने तक शराब के सेवन न करें।

मैडि से बनी हुयी किसी भी वास्तु का सेवन न करें, फास्ट फूड या जंक फूड गलती से भी न खाए। अल्सर के रोगी को ऐसा आहार देना चाहिये जिससे पित्त न बने, कब्ज और अजीर्ण न होने पाये। इसके अलावा अल्सर के रोगी को अत्यधिक रेशेदार ताजे फल और सब्जियों का सेवन करना चाहिए, जिससे अल्सर को जल्दी ठीक किया जा सके।

अधिक मात्रा में चाय, कॉफी, शराब, खट्टे व गरम पदार्थ, तीखे तथा जलन पैदा करने वाली चीजें, मसाले वाली वस्तुएँ आदि खाने से प्रायः अल्सर हो जाता है। इसके अलावा अम्लयुक्त भोजन, अधिक चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, कार्यभार का दबाव, शीघ्र काम निपटाने का तनाव, बेचैनी आदि से भी अल्सर बन जाता है। पेटिक अल्सर में आमाशय तथा पक्वाशय में घाव हो जाते हैं। धीरे-धीरे ऊतकों को भी हानि पहुंचनी शुरू हो जाती है। इसके द्वारा पाचक रसों की क्रिया ठीक प्रकार से नहीं हो पाती। फिर वहां फोड़ा बन जाता है।

धर्म अध्यात्म



साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक 1 (सूर्य) का अंक ज्योतिष में प्रभावः



डॉ. पूजाप्रसून एन गोल्डमंडलिन
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
09599101326, 07303855446

शक्ति, नेतृत्व, अहंकार और भाग्यः अंक ज्योतिष में अंक 1 का स्वामी सूर्य (Surya) होता है, जो सभी ग्रहों का राजा माना जाता है। सूर्य आत्म शक्ति, अधिकार, आत्मविश्वास, जीवन ऊर्जा, नेतृत्व और पहचान का प्रतिनिधित्व करता है। जैसे सूर्य सौरमंडल का केंद्र है, उसी प्रकार अंक 1 से प्रभावित लोग अक्सर समाज में शक्ति, प्रभाव और पहचान के केंद्र बन जाते हैं।

अंक 1 सृजन, स्वतंत्रता, साहस और व्यक्तित्व के कंपन को धारण करता है। यह वह अंक है जो सभी चक्रों की शुरुआत करता है और नई शुरुआत, नवाचार, महत्वाकांक्षा और आत्म अभिव्यक्ति का प्रतीक है। जो लोग महीने की 1, 10, 19 या 28 तारीख को जन्म लेते हैं या जिनका भाग्यंक (Destiny Number) 1 होता है, वे सूर्य की ऊर्जा से अत्यधिक प्रभावित होते हैं।

अंक 1 का सकारात्मक प्रभाव (मजबूत सूर्य):
जब सूर्य किसी व्यक्ति के अंक ज्योतिष या जीवन ऊर्जा में मजबूत और संतुलित होता है, तो वह व्यक्ति को कई शक्तिशाली गुणों से आशीर्वाद देता है।
1. **स्वाभाविक नेतृत्व**
अंक 1 वाले लोग स्वाभाविक रूप से नेतृत्व की भूमिकाओं में आगे बढ़ते हैं। वे अनुसरण करने की बजाय नेतृत्व करना पसंद करते हैं और अक्सर व्यापार, राजनीति, प्रशासन या संगठनों में निर्णय लेने वाले पदों पर नहीं चर्चते हैं।
2. **मजबूत आत्मविश्वास और आत्म विश्वास**
मजबूत सूर्य व्यक्ति को अटूट आत्मविश्वास देता है। ऐसे लोग अपनी

क्षमताओं पर विश्वास करते हैं और सफलता प्राप्त करने के लिए जोखिम उठाने से नहीं डरते।
3. **प्रसिद्धि और सम्मान**
सूर्य अधिकार, सरकार, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि का कारक है। मजबूत सूर्य व्यक्ति को समाज में नाम, यश और सम्मान दिला सकता है।
4. **स्वतंत्रता**
अंक 1 वाले लोग स्वतंत्र रूप से काम करना पसंद करते हैं। उन्हें नियंत्रण में रहना पसंद नहीं होता और वे अक्सर जीवन में अपना रास्ता स्वयं बनाते हैं।
5. **रचनात्मक और नवाचारी सोच**
इनमें नई सोच, नई प्रणाली और नए आंदोलन शुरू करने की क्षमता होती है।
6. **मजबूत जीवन शक्ति**
सूर्य जीवन ऊर्जा का भी प्रतीक है, जो व्यक्ति को मजबूत शारीरिक ऊर्जा और आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करता है।

अंक 1 के नकारात्मक प्रभाव (कमजोर या पीड़ित सूर्य):
जब सूर्य कमजोर, असंतुलित या नकारात्मक रूप से सक्रिय हो जाता है, तो यही शक्तिशाली ऊर्जा जीवन में चुनौतियाँ पैदा कर सकती है।
1. **अहंकार और घमंड**
स्वस्थ आत्मविश्वास के स्थान पर व्यक्ति में अत्यधिक अहंकार, जिद और प्रभुत्व की भावना आ सकती है।
2. **अधिकार से टकराव**
ऐसे लोगों को अक्सर बॉस, पिता समान व्यक्तियों या सरकारी अधिकारियों से संघर्ष का सामना करना पड़ता है।
3. **पहचान की कमी**
कड़ी मेहनत करने के बावजूद व्यक्ति को अपने कार्यों का उचित श्रेय या पहचान नहीं मिलती।
4. **अकेलापन**
अत्यधिक स्वतंत्रता के कारण व्यक्ति को टीमवर्क और रिश्तों में कठिनाई हो सकती है, जिससे अकेलापन बढ़ सकता है।
5. **निर्णय लेने में समस्या**
कमजोर सूर्य भ्रम, दिशा की कमी और कमजोर इच्छाशक्ति पैदा कर सकता है।
6. **स्वास्थ्य समस्याएँ**
सूर्य शरीर के कुछ महत्वपूर्ण अंगों का प्रतिनिधित्व करता है जैसे:

हृदय
आँखें
रक्त संचार
हड्डियाँ

जीवन ऊर्जा
जब सूर्य पीड़ित होता है, तो यह समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं:
आँखों की समस्या
हृदय संबंधी रोग
थकान
कम प्रतिरक्षा शक्ति
रक्तचाप की समस्या
आदि।
संकेत कि सूर्य (अंक 1 की ऊर्जा) नकारात्मक प्रभाव दे रहा है:
किसी व्यक्ति के जीवन में कुछ दोहराने वाले संकेतों से यह समझा जा सकता है कि सूर्य असंतुलित है।
1. **पिता से संबंधित समस्याएँ**
सूर्य पिता और पितृ अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है। कमजोर सूर्य के कारण:
पिता के साथ खराब संबंध
पिता से जल्दी अलगाव
पिता का स्वास्थ्य खराब होना
2. **आत्मविश्वास की कमी**
व्यक्ति बार-बार स्वयं पर संदेह कर सकता है या पहल करने में कठिनाई महसूस कर सकता है।
3. **प्रतिष्ठा को नुकसान**
बार-बार प्रतिष्ठा की हानि, आलोचना या सार्वजनिक अपमान सूर्य के असंतुलन का संकेत हो सकता है।
4. **करियर में अस्थिरता**
अधिकार वाले पदों को बनाए रखने में कठिनाई या बॉस के साथ लगातार समस्या।
5. **अहंकार से उत्पन्न विवाद**
घमंड, क्रोध या प्रभुत्व के कारण बार-बार विवाद होना।
6. **जीवन में दिशा की कमी**
जीवन में स्पष्ट लक्ष्य न होना या स्वयं को भटकना हुआ महसूस करना।
7. **कमजोर व्यक्तित्व आभा**
व्यक्ति को ऊर्जा की कमी महसूस हो सकती है या उसके व्यक्तित्व में आकर्षण कम हो सकता है।
जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता

जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता

जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता

जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता

जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता

जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता

जब सूर्य अत्यधिक मजबूत हो:
दिलचस्प बात यह है कि सूर्य अत्यधिक शक्तिशाली होने पर भी समस्याएँ पैदा कर सकता है।
इसके संकेत हो सकते हैं:
तानाशाही स्वभाव
अत्यधिक घमंड
दूसरों की बात न सुनना
प्रभुत्व के कारण अकेलापन
अत्यधिक क्रोध और अधीरता



इसलिए जीवन में संतुलन अत्यंत आवश्यक है।
सूर्य को मजबूत और संतुलित करने के उपाय:
सूर्य की ऊर्जा को आध्यात्मिक, जीवनशैली और ऊर्जात्मक उपायों के माध्यम से संतुलित किया जा सकता है।
1. **सूर्य अर्घ्य (सूर्य को जल अर्पित करना)**
यह सबसे शक्तिशाली उपायों में से एक है।
प्रतिदिन सुबह: उगते हुए सूर्य की ओर मुख करें तांबे के पात्र से अक्षत और रोली मिलाकर जल अर्पित करें।
सूर्य मंत्र का जाप करें यह सूर्य ऊर्जा को संतुलित करता है और आभा को शुद्ध करता है।
2. **सूर्य मंत्र:**
सूर्य मंत्र का जाप सूर्य के कंपन को मजबूत करता है।
मंत्र:
“ॐ ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय नमः”
या
आदित्य हृदय स्तोत्र
प्रतिदिन 108 बार जाप अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

कम से कम हर रविवार आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए।
3. **प्रतिदिन केसर का तिलक लगाएँ**
प्रतिदिन माथे पर केसर का तिलक लगाने से सूर्य ऊर्जा सक्रिय होती है।
4. **पिता और अधिकार का सम्मान करें**
क्योंकि सूर्य पिता का प्रतिनिधित्व करता है:
पिता और बड़ों का सम्मान करें पिता या पिता समान व्यक्तियों की सेवा करें अधिकार से जुड़े लोगों से संघर्ष समाप्त करने का प्रयास करें इससे सूर्य की ऊर्जा अत्यधिक सकारात्मक हो जाती है।
5. **माणिक्य (Ruby) या सिट्रीन (Citrine) धारण करें**
माणिक्य सूर्य का रत्न है और सिट्रीन सूर्य का क्रिस्टल माना जाता है।
लाभ:
आत्मविश्वास बढ़ाता है नेतृत्व क्षमता को मजबूत करता है प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है जीवन ऊर्जा को बढ़ाता है माणिक्य को रविवार के दिन सोने की अंगुठी में अनामिका उंगली में विधिपूर्वक धारण करना चाहिए।

सिट्रीन का ब्रेसलेट बाएँ हाथ में ऊर्जा सिद्ध करके पहनना चाहिए।
6. **सूर्योदय से पहले जागना**
सूर्य की ऊर्जा सुबह के समय सबसे अधिक शक्तिशाली होती है। कमजोर सूर्य वाले लोगों को: सूर्योदय से पहले उठना चाहिए सूर्य नमस्कार करना चाहिए कुछ समय सूर्य की रोशनी में बिताना चाहिए यह प्राकृतिक रूप से सूर्य आभा को मजबूत करता है।
7. **रविवार को दान**
सूर्य से संबंधित वस्तुओं का दान करने से सूर्य के कर्म संतुलित होते हैं।
दान करें: गेहूँ गुड़ तांबा लाल वस्त्र अधिकतर रविवार की सुबह दान करना शुभ माना जाता है।
8. **सूर्य नमस्कार**
यह योग की एक विशेष क्रिया है जो सौंदर्य सूर्य ऊर्जा को शरीर में सक्रिय करती है।
नियमित अभ्यास से:

सिट्रीन का ब्रेसलेट बाएँ हाथ में ऊर्जा सिद्ध करके पहनना चाहिए।
6. **सूर्योदय से पहले जागना**
सूर्य की ऊर्जा सुबह के समय सबसे अधिक शक्तिशाली होती है। कमजोर सूर्य वाले लोगों को: सूर्योदय से पहले उठना चाहिए सूर्य नमस्कार करना चाहिए कुछ समय सूर्य की रोशनी में बिताना चाहिए यह प्राकृतिक रूप से सूर्य आभा को मजबूत करता है।
7. **रविवार को दान**
सूर्य से संबंधित वस्तुओं का दान करने से सूर्य के कर्म संतुलित होते हैं।
दान करें: गेहूँ गुड़ तांबा लाल वस्त्र अधिकतर रविवार की सुबह दान करना शुभ माना जाता है।
8. **सूर्य नमस्कार**
यह योग की एक विशेष क्रिया है जो सौंदर्य सूर्य ऊर्जा को शरीर में सक्रिय करती है।
नियमित अभ्यास से:

सिट्रीन का ब्रेसलेट बाएँ हाथ में ऊर्जा सिद्ध करके पहनना चाहिए।
6. **सूर्योदय से पहले जागना**
सूर्य की ऊर्जा सुबह के समय सबसे अधिक शक्तिशाली होती है। कमजोर सूर्य वाले लोगों को: सूर्योदय से पहले उठना चाहिए सूर्य नमस्कार करना चाहिए कुछ समय सूर्य की रोशनी में बिताना चाहिए यह प्राकृतिक रूप से सूर्य आभा को मजबूत करता है।
7. **रविवार को दान**
सूर्य से संबंधित वस्तुओं का दान करने से सूर्य के कर्म संतुलित होते हैं।
दान करें: गेहूँ गुड़ तांबा लाल वस्त्र अधिकतर रविवार की सुबह दान करना शुभ माना जाता है।
8. **सूर्य नमस्कार**
यह योग की एक विशेष क्रिया है जो सौंदर्य सूर्य ऊर्जा को शरीर में सक्रिय करती है।
नियमित अभ्यास से:

जीवन शक्ति बढ़ती है आत्मविश्वास बढ़ता है प्रतिरक्षा शक्ति मजबूत होती है मानसिक स्पष्टता आती है।
9. **सूर्य के रंगों का उपयोग**
सूर्य से संबंधित रंग हैं: सुनहरा नारंगी लाल इन रंगों को पहनने या अपने आसपास रखने से सूर्य ऊर्जा मजबूत होती है।
10. **विनम्रता का विकास**
सूर्य कभी-कभी अहंकार पैदा कर सकता है, इसलिए विनम्रता और कृतज्ञता विकसित करना आवश्यक है। दूसरों की सहायता करना टीमवर्क की सहायता करना दूसरों की राय को ध्यान से सुनना
अंक 1 का आध्यात्मिक अर्थ:
सांसारिक सफलता से परे, सूर्य आत्मा के दिव्य प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है। इसका गहरा संदेश है: आत्म साक्षात्कार और प्रकाश की प्राप्ति। संतुलित सूर्य व्यक्ति को ऐसा बनाता है जो: बुद्धिमत्ता से नेतृत्व करता है, शक्ति का जिम्मेदारी से उपयोग करता है, दूसरों को प्रेरित करता है, सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करता है।
निष्कर्ष:
अंक 1 (सूर्य) अंक ज्योतिष की सबसे शक्तिशाली ऊर्जाओं में से एक है। यह पहचान, नेतृत्व, प्रतिष्ठा, जीवन ऊर्जा और भाग्य का संचालन करता है। जब सूर्य संतुलित होता है, तो यह महान नेता, नवप्रवर्तक और प्रभावशाली व्यक्तित्व उत्पन्न करता है। जब यह असंतुलित होता है, तो यह अहंकार, अधिकार से टकराव और आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याएँ ला सकता है। लेकिन जागरूकता, आध्यात्मिक साधना, अनुशासित जीवनशैली और उचित उपायों के माध्यम से सूर्य की ऊर्जा को हमेशा संतुलित किया जा सकता है।
जब किसी व्यक्ति के जीवन में सूर्य उज्वल रूप से चमकता है, तो वह केवल अपने भाग्य को ही प्रकाशित नहीं करता, बल्कि अनेक लोगों को जीवन की रोशनी देता है।

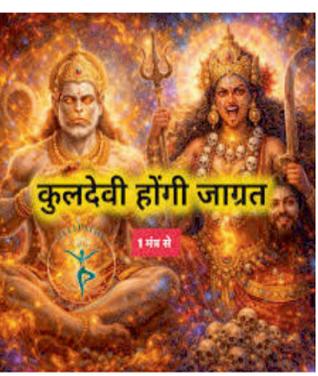
जीवन शक्ति बढ़ती है आत्मविश्वास बढ़ता है प्रतिरक्षा शक्ति मजबूत होती है मानसिक स्पष्टता आती है।
9. **सूर्य के रंगों का उपयोग**
सूर्य से संबंधित रंग हैं: सुनहरा नारंगी लाल इन रंगों को पहनने या अपने आसपास रखने से सूर्य ऊर्जा मजबूत होती है।
10. **विनम्रता का विकास**
सूर्य कभी-कभी अहंकार पैदा कर सकता है, इसलिए विनम्रता और कृतज्ञता विकसित करना आवश्यक है। दूसरों की सहायता करना टीमवर्क की सहायता करना दूसरों की राय को ध्यान से सुनना
अंक 1 का आध्यात्मिक अर्थ:
सांसारिक सफलता से परे, सूर्य आत्मा के दिव्य प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है। इसका गहरा संदेश है: आत्म साक्षात्कार और प्रकाश की प्राप्ति। संतुलित सूर्य व्यक्ति को ऐसा बनाता है जो: बुद्धिमत्ता से नेतृत्व करता है, शक्ति का जिम्मेदारी से उपयोग करता है, दूसरों को प्रेरित करता है, सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करता है।
निष्कर्ष:
अंक 1 (सूर्य) अंक ज्योतिष की सबसे शक्तिशाली ऊर्जाओं में से एक है। यह पहचान, नेतृत्व, प्रतिष्ठा, जीवन ऊर्जा और भाग्य का संचालन करता है। जब सूर्य संतुलित होता है, तो यह महान नेता, नवप्रवर्तक और प्रभावशाली व्यक्तित्व उत्पन्न करता है। जब यह असंतुलित होता है, तो यह अहंकार, अधिकार से टकराव और आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याएँ ला सकता है। लेकिन जागरूकता, आध्यात्मिक साधना, अनुशासित जीवनशैली और उचित उपायों के माध्यम से सूर्य की ऊर्जा को हमेशा संतुलित किया जा सकता है।
जब किसी व्यक्ति के जीवन में सूर्य उज्वल रूप से चमकता है, तो वह केवल अपने भाग्य को ही प्रकाशित नहीं करता, बल्कि अनेक लोगों को जीवन की रोशनी देता है।

जीवन शक्ति बढ़ती है आत्मविश्वास बढ़ता है प्रतिरक्षा शक्ति मजबूत होती है मानसिक स्पष्टता आती है।
9. **सूर्य के रंगों का उपयोग**
सूर्य से संबंधित रंग हैं: सुनहरा नारंगी लाल इन रंगों को पहनने या अपने आसपास रखने से सूर्य ऊर्जा मजबूत होती है।
10. **विनम्रता का विकास**
सूर्य कभी-कभी अहंकार पैदा कर सकता है, इसलिए विनम्रता और कृतज्ञता विकसित करना आवश्यक है। दूसरों की सहायता करना टीमवर्क की सहायता करना दूसरों की राय को ध्यान से सुनना
अंक 1 का आध्यात्मिक अर्थ:
सांसारिक सफलता से परे, सूर्य आत्मा के दिव्य प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है। इसका गहरा संदेश है: आत्म साक्षात्कार और प्रकाश की प्राप्ति। संतुलित सूर्य व्यक्ति को ऐसा बनाता है जो: बुद्धिमत्ता से नेतृत्व करता है, शक्ति का जिम्मेदारी से उपयोग करता है, दूसरों को प्रेरित करता है, सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करता है।
निष्कर्ष:
अंक 1 (सूर्य) अंक ज्योतिष की सबसे शक्तिशाली ऊर्जाओं में से एक है। यह पहचान, नेतृत्व, प्रतिष्ठा, जीवन ऊर्जा और भाग्य का संचालन करता है। जब सूर्य संतुलित होता है, तो यह महान नेता, नवप्रवर्तक और प्रभावशाली व्यक्तित्व उत्पन्न करता है। जब यह असंतुलित होता है, तो यह अहंकार, अधिकार से टकराव और आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याएँ ला सकता है। लेकिन जागरूकता, आध्यात्मिक साधना, अनुशासित जीवनशैली और उचित उपायों के माध्यम से सूर्य की ऊर्जा को हमेशा संतुलित किया जा सकता है।
जब किसी व्यक्ति के जीवन में सूर्य उज्वल रूप से चमकता है, तो वह केवल अपने भाग्य को ही प्रकाशित नहीं करता, बल्कि अनेक लोगों को जीवन की रोशनी देता है।

कुलदेवी का पता लगाने का शक्तिशाली मंत्र - 21 दिन की साधना

साधना से पहले सुरक्षा कवच - नकारात्मकता से बचाव का आसान उपाय

पिकी कुंडू
बहुत से लोग अपनी कुलदेवी के बारे में नहीं जानते। नाम नहीं पता, स्थान नहीं पता, पूजा का तरीका नहीं पता। ऐसे में कुलदेवी प्रसन्न नहीं हो पातीं और जीवन में बाधाएँ आती हैं। यह साधना खास तौर पर उन्हीं के लिए है जो अपनी कुलदेवी को जानना चाहते हैं और उनकी कृपा पाना चाहते हैं।
क्यों जरूरी है कुलदेवी का पता लगाना? कुलदेवी हमारे वंश की रक्षक होती हैं। वे ही हमारे परिवार की सुख-समृद्धि का आधार होती हैं। जब हम अपनी कुलदेवी को नहीं जानते, तो उनकी पूजा नहीं कर पाते और वे नाराज हो जाती हैं। इससे जीवन में कई तरह की बाधाएँ आती हैं - परिवार में कलह, संतान सुख में बाधा, आर्थिक तंगी, स्वास्थ्य समस्याएँ, करियर में रुकावट। इसलिए कुलदेवी का पता लगाना और उनकी पूजा करना बहुत जरूरी है।
कुलदेवी का पता लगाने का मंत्र यह मंत्र माँ अंबे को समर्पित है। यह एक शक्तिशाली शाबर मंत्र है जो आपको कुलदेवी तक पहुंचने का रास्ता खोलता है।
“ॐ गुरुजी, माता शोरोवाली पहाड़ा वाली कहलाई आदि भवानी, संग में चले हनुमान, भैरव चले, चौसठ योगिनी चले काली कलकत्ते वाली चले, ज्योता वाली, न चले तो दुहाई गुरु गोरखनाथ की, दुहाई शिव शंभु की।”
कितने दिन करें साधना? इस साधना को कम से कम 21 दिन करना है। 21 दिन लगातार करने से यह मंत्र आपके लिए सिद्ध हो जाता है और कुलदेवी के दर्शन या संकेत मिलने लगते हैं। 21 दिन का यह अनुष्ठान बहुत महत्वपूर्ण है। बीच में एक दिन भी न छोड़ें, नियमितता बहुत

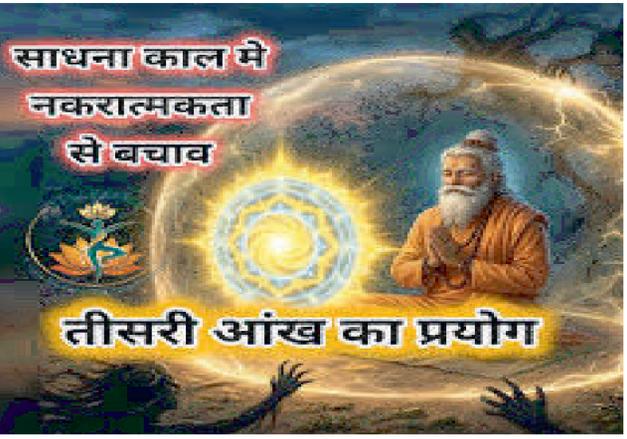


कुलदेवी होंगी जाग्रत
1 मंत्र से

जरूरी है।
कितना जाप करें?
1. रुद्राक्ष की माला से 1 माला (108 बार) रोज जाप करें।
2. अगर आप और तेजी से परिणाम चाहते हैं, तो 5 माला का जाप करें।
3. 5 माला जाप करने से यह मंत्र बहुत तेजी से काम करता है और जल्दी परिणाम मिलते हैं।
कब शुरू करें? इस साधना को शुरू करने के लिए पूर्णिमा का दिन सबसे उत्तम है। पूर्णिमा के दिन से शुरू की गई साधना जल्दी फलदायी होती है। अगर पूर्णिमा न हो तो किसी भी मंगलवार या शुक्रवार से भी शुरू कर सकते हैं।
कहाँ करें साधना? इस साधना के लिए भगवान शिव का मंदिर सबसे उत्तम स्थान है। अगर एक ही मंदिर में जा सकें तो वही मंदिर ही मूर्ति हो, तो सबसे अच्छा है। वहीं बैठकर साधना करें। अगर ऐसा मंदिर न मिले, तो किसी भी शिव मंदिर में जाकर साधना कर सकते हैं। अगर मंदिर न जा सकें तो घर पर भी कर सकते हैं।
आसन और दिशा

सात्विक भोजन करें। प्याज-लहसुन, मांस-मदिरा का पूर्ण त्याग करें।
2. ब्रह्मचर्य - 21 दिन के अनुष्ठान के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन करें। इससे ऊर्जा संचित होती है और साधना में सफलता मिलती है।
3. स्वच्छता - सुबह स्नान करके ही साधना करें। शरीर और वस्त्र साफ रखें।
4. नियमितता - 21 दिन लगातार करें, बीच में एक दिन भी न छोड़ें।
5. श्रद्धा - पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना करें। संदेह न करें।
क्या संकेत मिल सकते हैं? इस साधना को करने वाले कई भक्तों को ये संकेत मिले हैं -
1. सपने में कुलदेवी का दर्शन - सपने में कोई देवी आकर अपना परिचय देती हैं।
2. किसी संत का मार्गदर्शन - किसी संत या जानकार व्यक्ति से कुलदेवी के बारे में पता चलता है।
3. अचानक कहीं नाम सुनाई देना - कहीं बातचीत में या कहीं पढ़ते हुए कुलदेवी का नाम सुनाई देता है।
4. मन में अचानक नाम आना - ध्यान या साधना के दौरान मन में अचानक कोई नाम आता है।
5. पुराने दस्तावेज मिलना - घर की किसी पुरानी चीज में कुलदेवी का नाम मिल जाता है।
साधना के बाद क्या करें? 21 दिन की साधना पूरी होने के बाद -
1. अगर कुलदेवी का पता चल गया है, तो उनकी नियमित पूजा करें।
2. अगर पता नहीं चला, तो साधना को 41 दिन तक बढ़ा सकते हैं।
3. कुलदेवी के मंदिर जाकर दर्शन करें।
4. जरूरतमंदों को भोजन दान करें।
1. सात्विक भोजन - पूरे 21 दिन

पिकी कुंडू
हम पूजा-पाठ (worship) करते हैं, साधना (sadhna) करते हैं, लेकिन उसके बाद हमारी तबीयत खराब होने लगती है। घर के सभी लोगों की तबीयत बिगड़ने लगती है। कोई न कोई बीमार हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? और इससे कैसे बचा जा सकता है? आज इसी विषय पर बात करेंगे।
ऐसा क्यों होता है?
1. जब हम पूजा-पाठ या साधना करते हैं, तो हमारे चारों ओर ऊर्जा (energy) का प्रवाह बहुत तेज हो जाता है। अगर हमारे घर में नकारात्मकता (negativity) है, तो वह इस ऊर्जा से प्रभावित होकर और ज्यादा सक्रिय (active) हो जाती है। इसका सीधा असर हमारे शरीर पर पड़ता है।
2. दूसरा कारण - अगर हमारे अपने शरीर में ही कोई नकारात्मक ऊर्जा (negative energy) है, तो साधना के दौरान वह बाहर निकलने लगती है। इस कारण भी हमें शारीरिक कष्ट (physical discomfort) हो सकता है। इसलिए बहुत जरूरी है कि साधना से पहले खुद को और अपने आसपास के वातावरण को सुरक्षित (protected) कर लिया जाए।
कहाँ करें साधना? साधना करने के लिए सबसे अच्छी जगह है -
1. मंदिर - अगर आप किसी मंदिर में जाकर साधना कर सकते हैं, तो ये सबसे उत्तम है। मंदिर में पहले से ही पॉजिटिव एनर्जी (positive energy) होती है।
2. तुलसी के पास - अगर मंदिर नहीं जा सकते, तो घर में तुलसी के पौधे के पास साधना करें। तुलसी में नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने की बहुत शक्ति (power) है।
साधना से पहले करें ये 3 जरूरी काम
स्टेप 1 - गंगाजल छिड़के साधना में बैठने से पहले अपने चारों ओर और पूरे कमरे में थोड़ा सा गंगाजल (Gangajal) छिड़क लें। गंगाजल बहुत पवित्र (holy) होता है और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने की इसकी बहुत शक्ति है। अगर गंगाजल न हो तो सादे पानी में थोड़ा सा गंगाजल मिला लें।
स्टेप 2 - कुम्भकरेचक (Kumbhak Rechak) करें। ये एक तरह का प्राणायाम (breathing exercise) है -



तीसरी आंख का प्रयोग
1. गहरी सांस अंदर लें
2. सांस को अंदर रोके
3. धीरे-धीरे सांस बाहर छोड़ें
इससे आपके शरीर की नकारात्मक ऊर्जा बाहर निकलने लगती है और मन शांत (calm) होता है।
स्टेप 3 - सुरक्षा कवच का निर्माण महत्वपूर्ण है। पूरी सांस अंदर भर लें और अपना सारा ध्यान (focus) अपनी आंखों के बीच (बीचों के मध्य) पर लगाएं। अब ये आदेश (command) दें - मैं अपने आंखों के बीच (third eye) की शक्ति से अपने चारों तरफ एक दिव्य रक्षा कवच (divine protection shield) का निर्माण कर रहा हूँ / कर रही हूँ। मेरे आदेश के बिना मेरी साधना में कोई भी ख्याल (thought) पैदा नहीं हो सकता। मैं पूर्ण रूप से सुरक्षित (completely protected) हूँ।
जब आप ये भावना (feeling) करें, तो अपनी आंखों के बीच एक पीली-सुनहरी-लाल आभा (golden-red aura) को देखें। वह आभा धीरे-धीरे फैलती है और आपके चारों ओर घूमकर एक सुरक्षा कवच (protection shield) बना देती है।
इसके बाद आप पूरी तरह सुरक्षित (fully protected) हैं। अब आप अपनी साधना शुरू कर सकते हैं।
नकारात्मकता ज्यादा हो तो करें ये खास उपाय अगर आपको लगता है कि आपके घर में बहुत ज्यादा नकारात्मकता (too much negativity) है, तो रोज एक खास काम करें -
1. रोज सुबह या शाम तुलसी के पौधे (Tulsi plant) की 11 परिक्रमा (circumambulation) करें।
2. परिक्रमा करते समय मन में या मुख से तुलसी स्तुति (Tulsi prayer) बोलें।
3. साधना से पहले स्नान (bath) जरूर करें।
4. साधना के समय मन को शांत और एकाग्र रखें।
5. अगर कभी बहुत ज्यादा नेगेटिविटी महसूस हो, तो साधना कुछ दिन मंदिर में जाकर करें।
नियमित (regular) रूप से तुलसी की परिक्रमा करें
होश और साक्षी भाव इस पूरी प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण है होश और साक्षी भाव। सुरक्षा कवच बनाते समय पूरे होश में रहें। अपनी आंखों के बीच की आभा को महसूस करें। उसे अपने चारों ओर घूमते हुए देखें। यही सबसे बड़ी साधना है।

खेलों में भाग लेने से युवाओं में भाईचारे की भावना को मिलेगा बढ़ावा : डीसी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर मेहंदीपुर डाबोदा में फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित, 8 टीमों ने लिया भाग
पूर्व डीजीपी रंजीव दलाल, डीसीपी मयंक मिश्रा व एसडीएम अभिनव सिवाच ने किया खिलाड़ियों का प्रोत्साहित



परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 08 मार्च। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर रविवार को निकटवर्ती गांव मेहंदीपुर डाबोदा में 'मेरा गांव मेरा देश' संस्था द्वारा फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्र की 8 टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में डीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए प्रतियोगिता का शुभारंभ किया और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर

उनका उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में ग्राम पंचायत की ओर से डीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल, पूर्व डीजीपी रंजीव दलाल सहित अन्य अतिथियों का फूलों की माला पहनाकर गर्मजोशी से स्वागत किया गया। सरपंच रेशमा देवी ने अतिथियों का अभिनंदन करते हुए गांव की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल ने कहा कि खेल गतिविधियां युवाओं में अनुशासन,

टीम भावना और आत्मविश्वास का विकास करती हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन युवाओं को खेलों के प्रति प्रेरित करने के साथ-साथ उन्हें नरेश जैसी बुरी आदतों से दूर रखने में भी सहायक होता है। उन्होंने खिलाड़ियों को खेल भावना के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता के समापन अवसर पर विजेता टीमों को

नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। इस मौके पर पूर्व डीजीपी रंजीव दलाल ने कहा कि खेलों के माध्यम से युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए ऐसे आयोजनों का होना बेहद जरूरी है। उन्होंने खिलाड़ियों को मेहनत और लगन के साथ खेल में आगे बढ़ने का संदेश दिया।

महिला दिवस के अवसर पर उपायुक्त स्वनिल रविंद्र पाटिल ने गांव की महिलाओं को भी सम्मानित

किया और समाज में उनके योगदान की सराहना की। अधिकारियों ने मेरा गांव मेरा देश संस्था द्वारा संचालित दादा रूप चंद रीड ईडिया ज्ञान केंद्र भी देखा और संस्था के प्रयासों की प्रशंसा की।

इस अवसर पर एसडीएम अभिनव सिवाच (आईएसएस), डीसीपी मयंक मिश्रा, तहसीलदार सुदेश मेहरा, बीडीपीओ सुरेंद्र खत्री, प्रदीप दलाल, संजय रोहिल्ला सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति और अधिकारी मौजूद रहे।

गिरदावरी कार्य पूरी जिम्मेदारी और निष्पक्षता से करें कर्मचारी: डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

डीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल ने एसडीएम अभिनव सिवाच के साथ कई गांवों में पहुंचकर गिरदावरी कार्य का किया निरीक्षण

गांव डाबोदा खुर्द, मेहंदीपुर डाबोदा व कसार में खेलों का लिया जायजा, अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

बहादुरगढ़, 08 मार्च। डीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल ने रविवार को एसडीएम अभिनव सिवाच के साथ बहादुरगढ़ क्षेत्र के गांव डाबोदा खुर्द, मेहंदीपुर डाबोदा और कसार गांवों का दौरा कर खेलों में चल रही रबी फसल की गिरदावरी प्रक्रिया का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने रबी की फसलों की स्थिति का मौके पर जायजा लेते हुए राजस्व विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने राजस्व विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को गिरदावरी कार्य पारदर्शी व सटीक ढंग से करने के निर्देश दिए। इस कार्य में



किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान डीसी व एसडीएम ने बारी बारी से गांव डाबोदा खुर्द, मेहंदीपुर डाबोदा और कसार गांव के खेलों में पहुंचकर फसलों की स्थिति का अवलोकन किया तथा राजस्व अधिकारियों से गिरदावरी से संबंधित जानकारी ली। उन्होंने कहा कि गिरदावरी का कार्य पूरी जिम्मेदारी और निष्पक्षता के साथ किया जाए

ताकि किसानों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। डीसी ने ग्रामीणों से बातचीत कर फसलों की स्थिति और उनकी समस्याओं को भी जानकारी ली।

इस अवसर पर तहसीलदार सुदेश मेहरा, गांव कसार सरपंच टोनी, मेहंदीपुर डाबोदा सरपंच प्रतिनिधि संदीप तथा डाबोदा खुर्द से सरपंच मंजीत सहित अन्य किसान भी उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस केवल फूल, बधाइयों और औपचारिक भाषणों का दिन नहीं है। यह दिन दुनिया भर में महिलाओं और खासकर नाबालिग बच्चियों के खिलाफ हो रहे अन्याय, शोषण और अपमान के खिलाफ आवाज बुलंद करने का दिन है। दुर्भाग्य की बात है कि 21वीं सदी में भी महिलाएं जाति, रंग, वर्ग और आर्थिक हैसियत के आधार पर भेदभाव और हिंसा का शिकार हो रही हैं। यह सभ्य समाज के नाम पर एक गहरा कलंक है।

आज दुनिया के शक्तिशाली और अमीर लोगों की असलियत भी धीरे-धीरे सामने आ रही है। हाल के वर्षों में सामने आई एस्पटीन फाइल ने पूरी दुनिया को हिला दिया। इन खुलासों से यह स्पष्ट हुआ कि दुनिया के कई बड़े और प्रभावशाली लोग नाबालिग बच्चियों और महिलाओं के यौन शोषण जैसे जघन्य अपराधों में शामिल रहते हैं। यह केवल अपराध नहीं बल्कि मानवता के खिलाफ संगठित अत्याचार है। यह बेहद शर्मनाक है कि इतने गंभीर मामलों में भी कई ताकतवर लोग कानून के शिकंजे से बच जाते हैं। ऐसे सभी लोगों के खिलाफ बिना किसी दबाव और पक्षपात के कठोरतम कार्रवाई होनी चाहिए, चाहे वे कितने ही बड़े और रसखदार क्यों न हों?

भारत में भी महिलाओं की स्थिति को लेकर बड़ी-बड़ी बातें तो की जाती हैं, लेकिन जमीनी हकीकत बहुत कड़वी है। कामकाजी महिलाओं को आज भी कार्यस्थलों पर यौन शोषण, मानसिक उत्पीड़न और दबाव का सामना करना पड़ता है। कई बार उन्हें नौकरी बचाने के लिए अपने स्वभिमान को गिरवी रखना पड़ता है। यह केवल महिलाओं का नहीं बल्कि पूरे समाज का अपमान है। मजदूरी के क्षेत्र में भी महिलाओं का खुलेआम मानसिक एवं आर्थिक शोषण किया जा रहा है। उनसे पुरुषों के बराबर या उससे



अधिक काम कराया जाता है, लेकिन मजदूरी कम दी जाती है। यह व्यवस्था आज भी महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक मानने की मानसिकता को उजागर करती है।

यदि हम दलित महिलाओं की स्थिति पर नजर डालें तो तस्वीर और भी भयावह है। हरियाणा सहित कई राज्यों में दलित महिलाओं के खिलाफ यौन अपराधों के मामले लगातार सामने आते हैं, लेकिन जब न्याय की बात आती है तो व्यवस्था की संवेदनहीनता साफ दिखाई देती है। मुकदमे दर्ज होने में देरी, कमजोर जांच और बेहद कम कनिक्शन रेट यह साबित करते हैं कि व्यवस्था आज भी दलित महिलाओं को न्याय देने में गंभीर नहीं है।

वकालत के क्षेत्र में भी महिलाओं को बराबरी का स्थान नहीं मिला है। कई महिला अधिवक्ताओं को आज भी पुरुष सीनियरों का पिछलग्गू बनकर रहना पड़ता है। उन्हें पुरुष वकीलों के बराबर अवसर, सम्मान और सुविधाएं नहीं दी जाती। यह स्थिति उस पेशे में हो रही है जो न्याय और समानता की रक्षा का दावा करता है।

राजनीति में भी महिलाओं के नाम पर केवल प्रतीकत्वता दिखाई देती है। संसद और विधानसभाओं में पहुंचने वाली कई महिला प्रतिनिधि उन महिलाओं की आवाज बनकर खड़ी नहीं होतीं, जिन्होंने उन्हें वहां तक पहुंचाया। वे भी उसी पुरुष प्रधान राजनीति का हिस्सा बन जाती हैं जो

अधिवक्ता सुनीता रजत कल्सम,

उम्मीदवार, चुनाव बार काउंसिल ऑफ पंजाब एवं हरियाणा, बैलेट सीरियल नंबर 135

नारी शक्ति समाज की सच्ची प्रेरणा और प्रगति का आधार : डीडीपीओ

खंड साल्हावास में सहकारिता विभाग के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम आयोजित



परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 08 मार्च। खंड साल्हावास स्थित पैक्स कार्यालय में रविवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डीडीपीओ निशा तंवर ने कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता कोऑर्परेटिव बैंक के सहायक रजिस्ट्रार बीरेंद्र सिंह ने की।

मुख्यातिथि डीडीपीओ निशा तंवर ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को स्वास्थ्य, सुरक्षा, आत्मरक्षा और संतुलित खान-पान के प्रति जागरूक करना होता है। उन्होंने महिलाओं को आत्मरक्षा और सुरक्षा, उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा बदलते सामाजिक परिवेश में सजग रहने



का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति ही समाज की सच्ची प्रेरणा और प्रगति का आधार होती है।

उन्होंने कहा कि सभी महिलाएं सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर अच्छा काम शुरू करें समारोह की

अध्यक्षता करते हुए सहकारी समितियों के

सहायक रजिस्ट्रार बीरेंद्र सिंह ने कहा कि सहकारी संस्थाएं भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इस दौरान यूपीएससी में नव चयनित साल्हावास निवासी दीपक जाखड़ की दादी मां कृष्णा देवी को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और एमडीडी संस्था की ओर से चलाए जा रहे बालविवाह मुक्ति भारत अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

इस अवसर पर ब्लॉक समिति चेयरमैन मुनेशा देवी, साल्हावास सरपंच सुदेश मुनेशा, नेहरू पीजी कॉलेज से असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ प्रियंका, सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी सत्यनारायण यादव,

पूर्व पार्षद माया यादव, कमला नागर, पैक्स प्रबंधक नटथू सिंह सहित सहकारी समितियों के पदाधिकारी व अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

खेलों में बढ़चढ़ कर भाग ले महिलाएं : कप्तान सिंह

गांव तलाव में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'अस्मिता' महिला एथलेटिक्स प्रतियोगिता आयोजित



जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान बिरधाना ने बतौर मुख्य अतिथि विजेताओं को फिजा पुरस्कृत

झज्जर, 08 मार्च।

निकटवर्ती गांव तलाव में रविवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन में तथा माय भारत एवं भारतीय खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में महिला एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसमें जिले के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं संस्थानों से सैकड़ों बालिकाओं और महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग

लिया। जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान बिरधाना ने बतौर मुख्य अतिथि खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

मुख्य अतिथि कप्तान सिंह बिरधाना ने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं और बालिकाओं को खेल, फिटनेस तथा स्वस्थ जीवनशैली के प्रति प्रेरित करना और खेलों में उनकी सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना है।

उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन महिलाओं को खेलों के माध्यम से आत्मविश्वास, बेहतर स्वास्थ्य और सशक्तिकरण की दिशा

में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विजेता प्रतिभागियों को पदक एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

इस बीच माय भारत के जिला युवा अधिकारी ब्रिजेश कौशिक ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का विस्तार से जानकारी दी।

अस्मिता* महिला एथलेटिक्स प्रतियोगिता - परिणाम

रविवार को आयोजित 100 मीटर दौड़ (फाइनल) अंडर-13 वर्ग में प्रथम-लक्षिता, द्वितीय-हर्षिता, तथा तृतीय स्थान सृष्टि ने हासिल

किया, वहीं 13-18 आयु वर्ग में प्रथम-सुनिता, द्वितीय-भूमिका तथा तृतीय स्थान पर साक्षी रही।

इसी प्रकार 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रथम स्थान पर ज्योति, द्वितीय स्थान पर अनिता व तृतीय स्थान मानसी ने पाया।

1200 मीटर दौड़ की अंडर-13 वर्ग विधा में प्रथम-लक्षिता, द्वितीय-करुणा, तृतीय-सृष्टि रही, 13-18 आयु वर्ग में प्रथम भूमिका, द्वितीय-मनंत, तथा तृतीय स्थान साक्षी ने हासिल किया, 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में प्रथम-मानसी, द्वितीय-अनिता तथा तृतीय स्थान

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां एक वैज्ञानिक की महिलाओं ने चप्पलों से जमकर पिटाई कर दी घटना का वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस रिपोर्ट दर्ज करके मामले की जांच शुरू कर दी है। वैज्ञानिक की पिटाई की यह घटना घाटमपुर तहसील परिसर में हुई, जहां महिला और उसकी दो बेटियों ने झंसी में तैनात फॉरेंसिक वैज्ञानिक की चप्पलों से पिटाई कर दी। घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक घाटमपुर तहसील परिसर में उस समय हंगामा खड़ा हो गया, जब एक महिला और उसकी दो बेटियों ने झंसी में तैनात फॉरेंसिक साइंस विभाग के वैज्ञानिक की चप्पलों और लात-धूसों से पिटाई कर दी। इस मारपीट का वीडियो मौके पर मौजूद लोगों ने बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। पुलिस ने वैज्ञानिक की तहरीर पर महिला और उसकी दोनों बेटियों के खिलाफ मारपीट की रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

घटना के समय महिला अपनी



बेटियों के साथ अदालत में तारीख पर आई हुई थी। उसका गांव के ही एक व्यक्ति से जमीन को लेकर सिविल कोर्ट में मुकदमा चल रहा है। उसी दौरान झंसी में तैनात फॉरेंसिक साइंस विभाग के वैज्ञानिक संतोष कुमार कुरील भी तहसील परिसर में मौजूद थे।

वैज्ञानिक संतोष को देखकर उसे महिला ने उन पर गंभीर आरोप लगाते हुए उनसे बहस शुरू कर दी। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया और महिला व उसकी दोनों बेटियों ने संतोष को पकड़कर कार से बाहर खींच लिया। इसके बाद तीनों ने मिलकर उन्हें चप्पलों, लात-धूसों से पीटना शुरू कर दिया।

इस घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों पक्षों को घाटमपुर थाने ले आई। वैज्ञानिक संतोष कुमार कुरील की तहरीर पर पुलिस ने महिला और उसकी दोनों बेटियों के खिलाफ पुलिस मारपीट का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

वहीं महिला का कहना है कि जमीन के मामले में मदद करने की आड़ में संतोष कुरील ने करीब दो वर्षों तक उसके साथ दुष्कर्म किया। उसने बताया कि इस संबंध में पहले ही घाटमपुर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। उसके मुताबिक जांच के परिणाम के आधार पर अगली कार्रवाई की जाएगी।

समानता की राह में समांतर संघर्ष



विजय गर्ग

समानता मानव समाज का एक मूलभूत आदर्श है। हर व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, किसी भी जाति, वर्ग या समुदाय से जुड़ा हो—उसे समान अवसर, सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए। लेकिन वास्तविकता यह है कि समानता की इस राह पर चलते हुए समाज के विभिन्न वर्गों को समांतर संघर्ष करने पड़ते हैं। ये संघर्ष सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक स्तर पर दिखाई देते हैं।

सामाजिक असमानता की चुनौती

भारतीय समाज लंबे समय से विभिन्न प्रकार की असमानताओं से जूझता रहा है। जाति, लिंग, आर्थिक स्थिति और शिक्षा के आधार पर कई बार लोगों के अवसर सीमित हो जाते हैं। महिलाओं, दलितों, आदिवासियों और कमजोर वर्गों को अक्सर अपनी पहचान और अधिकारों के लिए अतिरिक्त संघर्ष करना पड़ता है।

यह संघर्ष केवल अधिकार प्राप्त करने का ही नहीं, बल्कि मानसिकता बदलने का भी संघर्ष है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को तोड़ना आसान नहीं होता।

महिलाओं का संघर्ष



महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार और नेतृत्व के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, फिर भी समाज अवसरों की राह में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। परिवार और समाज की अपेक्षाएँ, सुरक्षा की चिंता और आर्थिक निर्भरता जैसी बाधाएँ

उनके सामने आती हैं। इसके बावजूद महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, राजनीति और खेल जैसे क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। उनका यह संघर्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रहा है।



आर्थिक असमानता

समानता की राह में आर्थिक असमानता भी एक बड़ी चुनौती है। जब समाज के कुछ वर्गों के पास संसाधनों की अधिकता होती है और कुछ के पास मूलभूत सुविधाएँ भी नहीं होतीं, तब अवसरों की बराबरी संभव नहीं हो पाती। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की असमान उपलब्धता इस समस्या को और गहरा करती है।

इसलिए आवश्यक है कि विकास की नीतियाँ ऐसी हों जो समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच सकें।

शिक्षा की भूमिका

समानता स्थापित करने में शिक्षा सबसे प्रभावी माध्यम है। शिक्षा व्यक्ति को जागरूक बनाती है, उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों की समझ देती है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता प्रदान करती है।

जब शिक्षा सबके लिए सुलभ और गुणवत्तापूर्ण होगी, तब ही समाज अवसरों का मार्ग प्रशस्त होगा।

सकारात्मक परिवर्तन की दिशा

पिछले कुछ दशकों में समाज में कई सकारात्मक बदलाव भी आए हैं। महिलाओं की शिक्षा बढ़ी है, सामाजिक न्याय के लिए कानून बने हैं और विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कमजोर वर्गों को आगे बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

फिर भी समानता की राह अभी लंबी है। इसके लिए सरकार, समाज और प्रत्येक नागरिक को मिलकर प्रयास करना होगा।

निष्कर्ष
समानता का सपना केवल नीतियों से पूरा नहीं होगा, बल्कि इसके लिए सामाजिक चेतना और संवेदनशीलता भी आवश्यक है। जब समाज के सभी वर्ग एक-दूसरे के संघर्ष को समझे और सहयोग करेंगे, तभी वास्तविक समानता संभव होगी। समानता की राह में चल रहे ये समांतर संघर्ष हमें यह याद दिलाते हैं कि न्यायपूर्ण और समावेशी समाज का निर्माण निरंतर प्रयास, संवाद और सहानुभूति से ही संभव है।

समीकरणों और उत्कृष्टता की विरासत

डॉ. विजय गर्ग

एक समर्पित शिक्षिका हेमलता कपूर की जीवनी।

26 अगस्त, 1973 को हरियाणा के अंबाला कैंट के ऐतिहासिक सैन्य केंद्र में जन्मे इस प्रतिष्ठित शिक्षक के जीवन की दिशा एक विलक्षण, केंद्रित जुनून द्वारा शुरू से ही परिभाषित की गई थी: गणित में महारत हासिल करना और उसे पढ़ाना। एक ऐसी दुनिया में जहां कई लोग संख्याओं की जटिलताओं से दूर रहते हैं, उन्होंने तर्क और सौंदर्य की भाषा बूढ़ ली, तथा अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया जो अंततः उत्तरी भारत के हजारों युवा मनो को प्रभावित करेगा। शैक्षणिक आधार और प्रारंभिक कैरियर शैक्षिक नेतृत्व की ओर उनकी यात्रा अकादमिक प्रतिभा से भरी हुई थी। इस विषय के प्रति अपने प्रेम को उच्चतम स्तर तक ले जाकर उन्होंने एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से गणित में, शिमला की शांत समर हिल्स में स्थित। इसके बाद, उन्होंने बी.एड. की डिग्री पूरी कर ली। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा से। एक छात्र के रूप में उनका समय पूर्णता की निरंतर खोज से चिह्नित था, उन्होंने प्रत्येक परीक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त की। यह उस रकबटन परिश्रम करने वाली महिला का प्रमाण है जिसे वे अपना पेशवर जीवन में जानती थीं। उनकी शादी और पंजाब के मालीत में स्थानांतरित होने के बाद जीवन ने एक महत्वपूर्ण मोड़ लिया। यहीं से उनका करियर जोतीबी खलसा पब्लिक स्कूल में शुरू हुआ। 20 वर्षों तक उन्होंने कक्षा में काम किया और छात्रों द्वारा गणित को समझाने के तरीके को बदल दिया। उनके लिए गणित की समस्या कभी भी महज गणना नहीं थी; यह अनुशासन और आलोचनात्मक सोच का सबक था। नेतृत्व की चमक उड़ान अद्वितीय समर्पण किसी को नजर में नहीं आया।



दो दशकों तक कक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने के बाद, उन्हें प्रधानाचार्य पद पर पदोन्नत किया गया और लगभग 3,000 छात्रों वाले एक संस्थान का नेतृत्व संभाला गया। पिछले 11 वर्षों से, वह स्कूल प्रशासन की जटिलताओं को उसी सटीकता के साथ समझती रही हैं जिसे उन्होंने एक बार बीजगणितीय समीकरणों पर लागू किया था। उनके नेतृत्व में, स्कूल आत्मनिर्भर अनुशासन का प्रतीक बन गया है। उत्कृष्टता की यह संस्कृति शिक्षण संकाय से लेकर गैर-शिक्षण स्टाफ और स्वयं छात्रों तक फैली हुई है। सीबीएसई प्रशासन के पवित्र हॉल में उनकी प्रतिष्ठा अक्सर पहले है, जहां मानकों का सावधानीपूर्वक पालन करने और अपने स्कूल की अनुकरणीय प्रदर्शन के कारण वह अधिकारियों की रअच्छी प्रशंसा में बनी हुई हैं। शायद उनकी सफलता का सबसे बड़ा मापदंड हर क्षेत्र में छात्रों के नामांकन में वर्ष-दर-वर्ष (YOY) की वृद्धि है, यह एक ऐसा उपलब्धि है जिसने स्कूल ट्रस्टियों से उन्हें लगातार सराहना दिलाई है। दर्शन और व्युत्पन्नता ताकत हालांकि वह एक अनुभवी प्रशासक हैं, लेकिन उनका दिल अभी भी एक शिक्षक जैसा है। वह स्पष्ट रूप से स्वीकार करती हैं कि यद्यपि उनकी सबसे बड़ी ताकत गणित का शिक्षण है, लेकिन उनकी सबसे गहरी रकबजोरी वह

सहानुभूति है जो वे अपने विद्यार्थियों के प्रति महसूस करती हैं। विशेष रूप से, जब भी वह किसी विद्यार्थी को अपने प्रिय विषय में अंक खोते हुए देखती हैं, तो उन्हें वास्तविक पीड़ा होती है। यह संवेदनशीलता उनकी देखभाल में आने वाले प्रत्येक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उनके मिशन को प्रेरित करती है। स्कूल के द्वार से परे, वह एक रक्षक परमाणु परिवार में संतुलन पा लेती हैं उनके समाजसेवीयों में व्यस्त नहीं होती हैं, और उनकी बेटी ने चार्टर्ड अकाउंटेंट का प्रतिष्ठित पद हासिल कर लिया है। यह पारिवारिक इकाई उनका आधार बनी हुई है। हित और आगे का रास्ता यहां तक कि 3,000 छात्रों के नेता को भी एक क्षण के लिए विश्राम की आवश्यकता होती है। जब वह स्कूल या परिवार में व्यस्त नहीं होती हैं, तो उन्हें रसोई में आनंद मिलता है, विविध व्यंजन पकाते हैं, या पुराने हिंदी गीतों की धुनों में शांति पाते हैं। ये शौक एक ऐसी महिला को दर्शाते हैं जो परंपरा, सामंजस्य और कुछ अद्भुत बनाने के लिए आवश्यक प्रयास की सराहना करती है। भविष्य और अंततः सेवानिवृत्ति का और देखते हुए, उनका दृष्टिकोण सेवा पर केंद्रित है। वह अपने व्यावसायिक जीवन के बाद के वर्षों को अपने परिवार और अपनी जड़ों के प्रति सच्चे होकर, वंचित छात्रों को उन्नति के लिए समर्पित करने की योजना बना रही हैं। उनका लक्ष्य सरल किन्तु गहन है: यह सुनिश्चित करना कि विद्यार्थी कठिनाइयों कभी भी बच्चे के गणित में निपुण होने में बाधा न बनें। उनका जीवन इस बात का एक सुंदर प्रमाण है कि अनुशासन, जुनून और कड़ी मेहनत से कोई भी व्यक्ति भविष्य के परिवर्तनों को सचमुच बदल सकता है।

अग्रनगरी को मिली नई पहचान की सौगात: आगरा में बन रहा वर्ल्ड क्लास बुद्ध स्मारक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्णय पर उमड़ा जनआभार

आगरा में बन रहा वर्ल्ड क्लास बुद्ध स्मारक सामाजिक समानता, सामाजिक समरसता और समावेशी विकास का प्रतीक आगरा की जनता और समाजसेवीयों के दिल से निकली आवाज "धन्यवाद महाराजजी" आपका हृदय से आभार और अभिनंदन

आगरा, संजय सिंह। अग्रनगरी आगरा अब एक और ऐतिहासिक अध्याय लिखने की तैयारी में है। शहर की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान को नई ऊंचाइयों तक ले जाने वाला वर्ल्ड क्लास बुद्ध स्मारक अब आकार लेने लगा है। कालिंदी विहार (शाहदरा) स्थित बुद्ध पार्क में प्रस्तावित इस भव्य स्मारक का निर्माण कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। जैसे-जैसे परियोजना जमीन पर साकार हो रही है, वैसे-वैसे क्षेत्रवासियों और समाजसेवीयों में उत्साह, गर्व और उम्मीद की लहर भी तेज होती जा रही है।

उपेक्षा से उत्कृष्टता तक: बदलेगी बुद्ध पार्क की तस्वीर
आगरा के वरिष्ठ समाजसेवी चन्द्रवीर सिंह फौजदार ने इसे प्रदेश के विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा कि वर्षों से उपेक्षित पड़े बुद्ध पार्क का अब कायाकल्प होने जा रहा है। आधुनिक सुविधाओं, आकर्षक सौंदर्यकरण और सुव्यवस्थित विकास के साथ यह पार्क भविष्य में केवल आगरा ही नहीं, बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के लिए एक आदर्श सार्वजनिक स्थल बन सकता है। उनका मानना है कि जनता यह परियोजना पूर्ण होगी तो यह स्थान पर्यटकों, शोधार्थियों और आध्यात्मिक यात्रियों के लिए भी एक बड़ा आकर्षण बनेगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश में विकास की जो तेज रफ्तार दिखाई दे रही है, वह अभूतपूर्व है। आगरा में पार्कों का विकास, सड़कों का विस्तार, पेयजल व्यवस्था और शहर के सौंदर्यीकरण के कार्य इस परिवर्तन की स्पष्ट मिसाल हैं।

भारतीय जाटव समाज के प्रयासों ने दिलाई सफलता - उपेंद्र सिंह जी के प्रयास रंग लाए फ्रंटियर मिनिॉताएं एवं समाजसेवी प्रयास चौधरी ने भारतीय जाटव समाज के सवाय की



सराहना करते हुए कहा कि यह निर्णय वंचित वर्गों के अधिकारों और अवसरों को सुरक्षित रखने की सरकार की प्रतिबद्धता को भी प्रमाणित करता है। कालिंदी विहार (शाहदरा) में बन रहा यह विश्वस्तरीय बुद्ध स्मारक सामाजिक एकता, सांस्कृतिक चेतना और बौद्ध दर्शन के मूल्यों को मजबूत करने का माध्यम बनेगा। इस वर्ल्ड क्लास बुद्ध पार्क विकास परियोजना के पीछे भारतीय जाटव समाज की निरंतर पहल भी महत्वपूर्ण रही है। भारतीय जाटव समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र सिंह के सतत प्रयासों से बुद्ध पार्क के विकास को गति मिली है। 3 अगस्त 2025 को समाज के प्रतिनिधिमंडल ने लखनऊ में मुख्यमंत्री आवास पर भेंटकर ज्ञापन सौंपा था, जिसके बाद योगी सरकार ने इस मांग पर गंभीरता दिखाते हुए सकारात्मक निर्णय अनिल कुमार (पूर्व अपर जिला जज) और मुख्यमंत्री के सचिव नेत्रपाल सिंह की सक्रिय भूमिका रही। उन्होंने कहा कि आज वही प्रयास जमीन पर आकार लेते दिखाई दे रहे हैं और आगरा के लोगों की आंखों में एक नए, गौरवशाली भविष्य के सपने चमक रहे हैं। अग्रनगरी में बुद्ध स्मारक को लेकर जो उत्साह और उम्मीद का वातावरण बना है, वह साफ संकेत दे रहा है कि आने वाले समय में आगरा केवल ताजमहल के लिए ही नहीं, बल्कि इस भव्य बुद्ध स्मारक के लिए भी दुनिया भर में

पहचान जाएगा।
सामाजिक समानता और समावेशी विकास का प्रतीक - जनता के दिल से निकली आवाज "धन्यवाद महाराजजी"
समाजसेवी पंकज जैन ने इस महत्वपूर्ण निर्माण को एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए मुख्यमंत्री योगी महाराजजी का हृदय से अभिनंदन और आभार प्रकट किया और कहा कि आगरा में बन रहा यह वर्ल्ड क्लास बुद्ध स्मारक न केवल सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करेगा, बल्कि बौद्ध मूल्यों के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस भव्य बुद्ध स्मारक के निर्माण का श्रेय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को जाता है। लोगों की भावनाएं इतनी प्रबल हैं कि वे खुले दिल से कह रहे हैं धन्यवाद महाराजजी! उन सभी का मानना है कि यह स्मारक आगरा की छवि को नई दिशा और नई पहचान देगा। साथ ही बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों के लिए एक सुरक्षित, स्वच्छ और प्रेरणादायी सार्वजनिक स्थल भी उपलब्ध कराएगा। यह निर्णय मोदी योगी जी की सरकार की उस प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है, जिसमें वंचित और पिछड़े वर्गों के अधिकारों और अवसरों को सुरक्षित रखने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यह ऐतिहासिक निर्माण सामाजिक समानता, सामाजिक समरसता और समावेशी विकास का प्रतीक है।
आगरा की पहचान को मिलेगी वैश्विक

ऊंचाई
इस महत्वाकांक्षी परियोजना को प्रदेश के विकास और सामाजिक समरसता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताते हुए शहर के समाजसेवी राजू शर्मा ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति हृदय से आभार एवं अभिनंदन व्यक्त किया और कहा कि योगी महाराज जी जो कहते हैं वो करते हैं, और जो भी महाराजजी पर भरोसा करता है, उसका भरोसा योगीजी कभी नहीं टोड़ते। योगीजी जैसा मुख्यमंत्री अब तक यूपी में नहीं हुआ। उन्होंने सभी के लिए सराहनीय कार्य किये हैं। योगीजी की सरकार में बनने जा रहा यह वर्ल्ड क्लास स्मारक आगरा की छवि को नई दिशा और विशिष्ट पहचान प्रदान करेगा। यह स्मारक केवल एक निर्माण परियोजना नहीं, बल्कि आगरा के भविष्य की नई पहचान गढ़ने वाला ऐतिहासिक निर्णय है। इससे आगरा की पहचान को वैश्विक ऊंचाई मिलेगी। यह स्थल भविष्य में उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश और विश्व स्तर पर एक आदर्श सार्वजनिक स्थल के रूप में स्थापित होगा। हमारा विश्वास है कि यह स्मारक आने वाले वर्षों में आगरा के सांस्कृतिक और सामाजिक मानचित्र को नई चमक देगा और प्रदेश की पहचान को वैश्विक स्तर पर और मजबूत करेगा। आने वाले समय में आगरा इस भव्य बुद्ध स्मारक के लिए ही दुनिया भर में जाना जाएगा।

नेतन्याहू से जाता : आखिर ये रिश्ता क्या कहलाता है ?

(आलेख : बादल सरोज)

यह समय बहुत ही असामान्य और अभूतपूर्व समय है। राजेश जोशी एक छोटी सी कविता 'शांति की अपील' में कहते हैं कि "जब तक मैं एक अपील लिखता हूँ, आग लग चुकी होती है सारे शहर में / हिन्ने ठीक करता हूँ जब तक अपील के/ कर्फ्यू का ऐलान करती धूमने जाती है गाड़ी/ अपील छपने जाती है जब तक प्रेस में/ दुकानें जल चुकी होती हैं/ मारे जा चुके होते हैं लोग/ छपकर जब तक आती है अपील/ अपील की जरूरत खत्म हो चुकी होती है!" ठीक उसी तरह की भयावह स्थिति से इस समय दुनिया गुजर रही है। जब तक एक नृशंस वारदात का दर्ज करने के लिए विवर्ण जुटाते हैं, तब तक दूसरी पाशाविकाती की खबर आ जाती है। जब तक उसके तथ्य जांचते हैं, तब तक बर्बरता का एक और काण्ड घट चुका होता है। सप्ताह-दस दिन की छोटी सी अवधि में जो अघट घटा है, उसके जितने भी आयाम हैं, वे सभी गंभीर और दूर तक असर डालने वाले हैं। इनमें से किसी की भी अनदेखी वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए महंगी खांभट हो सकती है। मगर ऐसा करने के लिए विस्तार में जाना होगा, इसलिए फिलहाल यहाँ इनमें से सिर्फ एक, भारत के हिसाब से कुछ ज्यादा ही अजीब आयाम, दुनिया के सबसे दुष्ट देश इजरायल और उसके अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा घोषित मानवता के विरुद्ध युद्ध के अपराधी वैजामिन नेतन्याहू के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उफनती, उलफुलाती आसक्ति, भक्ति की सीमाओं को लांघती अभ्यर्थना और रसातल में पहुँचाई जाती भारत की विदेश नीति और कूटनीतिक प्रतिष्ठा से जुड़े आयाम पर ही केंद्रित रहते हैं।

नेरेंद्र मोदी भारत के पहले प्रधानमंत्री हैं, जो एक अक्षर 23 को हुए हमला से उस हमले की भर्सना के इजरायल का दूसरी यात्रा भारत जैसे संप्रभुता के हामी और विश्वशांति के हिमायती देश की अब तक की अंतर्राष्ट्रीय पहचान को जोरदार नुकसान पहुंचाने वाली थी। अपनी इजरायल यात्रा के दौरान भारतीय गाँवों के कायाकल्प के लिए 'विलेज ऑफ एकसिलेंस' कार्यक्रम के तहत इजरायल की कथित आधुनिक कृषि तकनीक को सीधे भारत के जमीनी स्तर यानी गाँवों तक पहुँचाने का वचन भर रहे थे। साझेदारी रक्षा और व्यापार से आगे ले जाकर पेगासस जैसे जासूसी यंत्रों से हर तरह की सूचना चुराने वाले दुष्ट देश की मदद से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में भी गाँवों को 'आधुनिक' बनाने का करार कर रहे थे। जब वे गाँवों के वैगुनाह बच्चों सहित आम नागरिकों के हृदयों नेतन्याहू के साथ गालबहियां कर रहे थे। वहां की संसद में बोलते हुए इस अवैध राष्ट्र की तारीफ में कसौदे पढ़ रहे थे, ठीक उस समय इजरायल भारत के परम्परागत और भरोसेमंद दोस्त देश ईरान पर ऐसे हमले की उलटी गिनती गिन रहा था, जैसा हमला द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के कालखण्ड सहित ताजा इतिहास में कभी नहीं हुआ। इजरायली संसद में मोदी उस दुष्ट राष्ट्र का गुणगान कर रहे थे, जिसे एक टम्प के अमरीका को छोड़ धरती का हर देश, किसी न किसी अनुपात में, धिक्कारता है। जिसके खिलाफ 2015 से 24 के बीच संयुक्त राष्ट्र संघ में 173 से अधिक प्रस्ताव पारित किये जा चुके हैं। उसके साथ खड़े होकर उसकी संसद में मोदी ने जो बोला और जो नहीं बोला, वह दोनों ही सफ़िक भारत नहीं, दुनिया भर के अब तक के लगभग सर्वमान्य नजरिये से पूरी तरह उलटा था। उन्होंने 7

लिए तो शब्द जुटा लिए, जिसके बारे में खुद तत्कालीन यूनाने उ महासचिव कह चुके थे कि 'इसे शून्य में, यानि उन हाहाल से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए, जिनमें यह हुआ है।' मगर फिलिस्तीन के गजा में इजरायल द्वारा किये जा रहे वीथस नरसंहार पर उनके मुँह से बोल नहीं फूटे। गजा के स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी आँकड़ों के अनुसार हमला शुरू होने से लेकर फरवरी 2026 तक छोटे से गजा में 71,000 से अधिक फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं। इनका एक बड़ा हिस्सा -- लगभग 70% -- महिलाओं और बच्चों का है। करीब 10,000 से अधिक लोग अभी भी लापता हैं या नष्ट हुई इमारतों के मलबे के नीचे दबे हैं। सीधे हमलों के अलावा कम से कम 440 लोग भूखमरी और कुपोषण के कारण अपनी जान गंवा चुके हैं। जिसके साथ भारत हमेशा से रहा है। जिसके बारे में खुद नरेंद्र मोदी के कुनबे के अटल बिहारी वाजपेयी, भारत के विदेश मंत्रों के नाते भारत की स्थिति स्पष्ट कर चुके हैं। जनता पार्टी की जीत के बाद 1977 में अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली के रामलीला मैदान में दिए अपनी भाषण में कहा था कि: "एक गलतफहमी पैदा की जा रही है कि जनता पार्टी की सरकार बन गई है। वो अरबों का साथ नहीं देगी, इजरायल का साथ देगी। ... मध्य-पूर्व के बारे में ये स्थिति साफ है कि अरबों की जिस भाषण में इजरायल कब्जा करके बैठा है, वो जमीन उसको खाली करनी होगी। आक्रमणकारी आक्रमण के फलों का उपभोग करे, यह हमें अपने संबंध में स्वीकार नहीं है। जो नियम हम पर लागू है, वो और भी लागू होगा। अरबों की जमीन खाली होनी चाहिए। जो फिलिस्तीनी हैं, उनके अधिकारों की प्रस्थापना होनी चाहिए। ... मध्य-पूर्व का एक ऐसा हल निकालना होगा, और

जिसमें आक्रमण का परिमार्जन हो और स्थायी शांति का आधार बने। गलतफहमी की गुंजाइश नहीं है।" वाजपेयी जिनके अधिकारों की प्रस्थापना की बात कर रहे थे, मोदी उन्हीं फिलिस्तीनियों के नरसंहारी के मेहमान बने कल्लेआम पर चुप्पी साधे बैठे रहे। यह आनयास नहीं है। यही शर्मनाक खामोशी ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्ला खामनेई की घोर आपराधिक तरीके से की गयी हत्या को लेकर भी दिखी। खामनेई वही व्यक्ति हैं, जिनसे मुलाकात करने मोदी तेहरान गए थे और वहां जाकर कहा था कि 'भारत और ईरान के रिश्ते उतने ही पुराने हैं, जितना पुराना दुनिया का इतिहास है।' 'ईडियन एक्सप्रेस' में उस समय छपी खबरों के अनुसार मई 2016 में अपनी ईरान यात्रा के दौरान मोदी ने वहां के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला सैयद अली खामनेई से मुलाकात की और उन्हें कुनान की 700 वर्ष पुरानी एक दुर्लभ पांडुलिपि की प्रतिकृति भेंट की। कुफिक लिपि में लिखी गई कुनान की इस प्रति को पैगंबर के दामाद और चौथे इस्लामी खलीफा हजरत अली से संबंधित माना जाता है। इसी यात्रा के दौरान मोदी ने ईरान के तत्कालीन राष्ट्रपति हसन रुहानी को मिर्जा गालिब की फारसी कविताओं का संग्रह और रामायण का फारसी अनुवाद भेंट किया था। इतना भर नहीं, जब मई 2024 में ईरान के तत्कालीन राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मारे गए, तो भारत सरकार ने उनके सम्मान में 21 मई 2024 को एक दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की थी। उसी मोदी सरकार ने उसी ईरान के सर्वोच्च नेता के सस तहर्ह मार दिए जाने के बाद शाब्दिक शोक भी व्यक्त नहीं किया, बल्कि इससे उलट हमलावर देश इजरायल के नेतन्याहू और उसके सहयोगी देशों के राष्ट्र प्रमुखों को फोन करके खुद मोदी

उनके साथ संवेदनाएं और एकजुटता जाता रहे हैं। इतनी निलज्ज कूटनीति भारत की कभी नहीं रही। आखिर यह रिश्ता क्या कहलाता है? पूरा विश्व जिसकी निंदा, भर्सना और तिरस्कार कर रहा है, उसके प्रति उमड़ते इस हेज की वजह क्या है। भारत के हित तो पक्के से नहीं हैं, क्योंकि इस्लामिक देशों के संगठन -- ओआईसी -- में जब-जब कश्मीर के सवाल पर पाकिस्तान ने मुस्लिम कार्ड चलने की कोशिश की, तब-तब ईरान वह प्रमुख देश था, जिसने उसे रोका और भारत का साथ दिया। 1994 में जब पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्रमानवाधिकार आयोग पर भारत के खिलाफ प्रस्ताव लाने की कोशिश की थी, तब भी ईरान ने अंतिम समय में भारत का साथ दिया और प्रस्ताव को रोकने में मदद की। भारत की तेल आपूर्ति का सबसे भरोसेमंद और किफायती स्रोत भी था। स्वयं मोदी ने मई 2024 में भारत और ईरान ने चाबहार पोर्ट के शाहिद बेहेशती टर्मिनल के संचालन के लिए 10 साल के अनुबंध को अपनी एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया था। जबकि इजरायल हमेशा उस अमरीका के साथ रहा, जिससे उसे रोका और भारत के खिलाफ साजिशें रचने के सिवा कुछ नहीं किया। फिर ऐसा क्या है, जिसके चलते भारत आज वहाँ खड़ा है, जहां वह कभी नहीं रहा? अमरीकी दबाव, टम्प को खुश करने और खुश बनाए रखने, एमटीडीए की फाइलों में दर्ज रहस्यों के अलावा, उनके साथ भेड़िये का मुँह भेड़िये द्वारा सूँधने का मामला है। स्वाभाविक अपनाया वह 'मुस्लिम विरोध' और हिंसक प्रवृत्ति है, जिसमें मोदी और उनका कुनबा खुद को नेतन्याहू जैसा के नजदीक मानता है। यह रिश्ता न तो आज का है, ना इकतरफा है, ना ही दबा-छुपा है। इजरायली विदेश मंत्रालय के सार्वजनिक

किये गए दस्तावेजों और ऐतिहासिक टेलीग्रामों में इसकी कथायें भरी पड़ी हैं। तब बेजी गोपनीय डाक में इजरायली राजनयिकों की मुस्लिम विरोधी राजनीति के आधार पर उसको इजरायल का एक स्वाभाविक और मजबूत समर्थक मानते-बताते हैं। वाशिंगटन में तत्कालीन इजरायली राजदूत डेविड तूर्गिंस ने 25 मार्च 1977 को तेलअबीवब में भेजे एक टेलीग्राम में लिखा था कि रूढ़िवादी जनसंघ अपने मुस्लिम विरोधी स्वभाव के कारण इजरायल का समर्थक है। 1980 में, भारत में इजरायली उच्चायुक्त हाइम डिबोन ने एक टेलीग्राम में लिखा कि नई भारतीय जनता पार्टी वास्तव में रेषेण बदलकर जनसंघ ही है और इसके सदस्य इजरायल के प्रति समर्थक का रुख रखते हैं। इतना ही नहीं, 1960 के दशक से ही इजरायली राजनयिकों ने जनसंघ के नेताओं के साथ गहरे संबंध बनाए हुए थे। राजदूतों ने अपनी रिपोर्ट्स में दर्ज किया था कि जब जनसंघ के हाथों में दिल्ली की स्थानीय सरकार आई, तो वे इजरायल के साथ सहयोग करने के लिए पूरी तरह तैयार थे। मतलब यह कि जब समूचा देश, उसकी संसद मध्य-पूर्व से फिलिस्तीन तक के सवाल पर एक राय थी, तब भी इस कुनबे ने इजरायल के साथ रिश्ते बनाए हुए थे। मुस्लिम विरोध वह प्रमुख वजह तब भी थी, आज भी है। इस मलिनैट ग्रंथि के चलते यहूदीवाद के दुष्ट इरादे के साथ उन्हें भाईचारा महसूस होता है। इस तरह संघ और भाषा ने 'विदेश नीति अंततः संबंधित देश की आंतरिक नीतियों का ही प्रतिबिम्ब होती है।' जो शास्त्रीय धारणा का उदाहरण पेश कर दिया है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के आधार को भी उस नफरती जहर से विषाक्त कर दिया है, जिसे वह देश के भीतर फैलाने में लगे है।

संगम विश्वविद्यालय में शोधार्थियों को मिलेगा शोध पद्धति का प्रशिक्षण

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा



भीलवाड़ा संगम विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन संकाय में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा प्रायोजित एक सप्ताह की शोध पद्धति कार्यशाला का आयोजन 9 मार्च से प्रारंभ हो रहा है। कार्यक्रम के निदेशक एवं प्रबंध अध्ययन संकाय के अधिष्ठाता डॉ. मुकेश शर्मा ने बताया कि यह कार्यक्रम सामाजिक विज्ञान के शोधार्थियों के लिए आयोजित किया जा रहा है। इसमें 30 शोधार्थियों का चयन किया गया है, जिन्हें देश के जाने-माने शोधकर्ता एवं विशेषज्ञ संसाधन व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. नवीन माथुर होंगे, जो राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के पूर्व प्रोफेसर रह चुके हैं।

प्रो. करुणेश सक्सेना, कुलपति, संगम विश्वविद्यालय ने बताया कि इस प्रकार की

पहल विश्वविद्यालय में शोध पारिस्थितिकी को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद का आधार व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह के सहयोग से शोधार्थियों को शोध कार्य में आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण

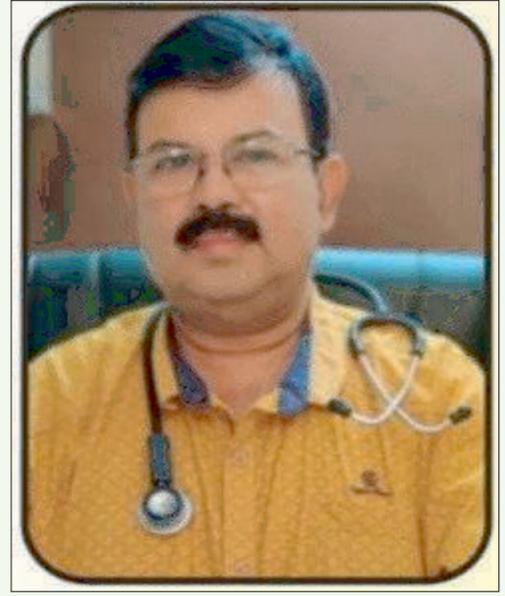
सहायता मिलती है।

इस अवसर पर प्रो. वाइस चांसलर प्रो. मानस रंजन पाणिग्रही एवं रजिस्ट्रार डॉ. आलोक कुमार ने भी विभाग को इस महत्वपूर्ण पहल के लिए सराहना की और कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से शोध को

टहलने से शरीर भी स्वस्थ, मन भी स्वस्थ

डॉ. रुप कुमार वर्नजी

होमियोपैथिक चिकित्सक



पैदल चलना केवल एक शारीरिक गतिविधि नहीं, बल्कि शरीर और मन—दोनों के लिए एक प्राकृतिक औषधि है। यह निःशुल्क है, सहज है और हर आयु वर्ग के लिए उपयुक्त भी। एक पुरानी कहावत है—“चलना मनुष्य के लिए सबसे अच्छी दवा है।” वास्तव में, संतुलित आहार और अच्छी नींद के साथ नियमित पैदल चलना उत्तम स्वास्थ्य की मजबूत नींव रखता है। यदि हम प्रतिदिन कम से कम 15 से 30 मिनट भी नियमित रूप से पैदल चलें, तो न केवल हमारा शारीरिक स्वास्थ्य सुधरता है, बल्कि मानसिक तनाव कम होता है और मन में सकारात्मकता का संचार होता है। (हालांकि इस भयानक ठंड में सुबह सवेरे बाहर पैदल टहलने से बचे)

आज की व्यस्त जीवनशैली, तकनीक पर बढ़ती निर्भरता और हाल के वर्षों में आई महामारी ने हमारी गतिशीलता को काफी सीमित कर दिया है। लेकिन यदि हम अपने लिए थोड़ा-सा समय निकाल लें और पैदल चलने की आदत बना लें, तो यह अनेक रोगों से बचाव में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मस्तिष्क में सकारात्मक परिवर्तन :- नियमित पैदल चलना मस्तिष्क की सेहत के लिए अत्यंत लाभकारी है। शोध बताते हैं कि कम प्रभाव वाले एरोबिक व्यायाम, जैसे पैदल चलना प्रारंभिक डिमेंशिया को रोकने में सहायक होता है, अल्जाइमर रोग के जोखिम को कम करता है, मानसिक स्वास्थ्य, स्मरण शक्ति और एकाग्रता में सुधार करता है, यह मन को शांत रखता है और अवसाद व चिंता जैसी समस्याओं को भी कम करने में मदद करता है।

हृदय स्वास्थ्य का सच्चा साथी :- पैदल चलना हृदय रोगों के जोखिम को कम करने का एक प्रभावी उपाय है।

हृदय रोग या स्ट्रोक की रोकथाम में यह दौड़ने से कम प्रभावी नहीं है।

यह रक्तचाप को नियंत्रित करता है, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को संतुलित करता है, रक्त संचार को बेहतर बनाता है। नियमित चलना हृदय को मजबूत बनाकर जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

फेफड़ों को करता है सशक्त :- पैदल चलना एक उत्तम एरोबिक व्यायाम है, जो शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाता है। गहरी और नियमित सांसों के कारण फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ती है, शरीर से विषैले तत्व बाहर निकलते हैं, सांस से जुड़ी समस्याओं में राहत मिलती है। (डायबिटीज की रोकथाम में भी पैदल चलना अत्यंत पैदल चलना हृदय रोगों के जोखिम को कम करने का एक प्रभावी उपाय है।

शर्करा नियंत्रण में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है।

पाचन तंत्र को रखे दुरुस्त :- रोजाना लगभग 30 मिनट पैदल चलना पाचन क्रिया को बेहतर बनाता है, कब्ज की समस्या से राहत देता है, भविष्य में पेट के कैंसर (कोलन कैंसर) के खतरों को कम करता है। यह शरीर को प्राकृतिक रूप से शुद्ध और सक्रिय बनाए रखता है। जोड़ों और हड्डियों को देता है मजबूती :- पैदल चलना जोड़ों की गतिशीलता बढ़ाता है और हड्डियों के क्षरण को रोकने में सहायक होता है। आर्थराइटिस फाउंडेशन के अनुसार, रोज कम से कम 30 मिनट चलने से जोड़ों की जकड़न कम होती है, सूजन और दर्द में राहत मिलती है, फ्रैक्चर का प्रभावी सिद्ध हुआ है। अध्ययनों के अनुसार, नियमित पैदल चलने से रक्त

पटना में 'महिला उद्यमी सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन; आत्मनिर्भर बिहार की नींव रख रही हैं महिलाएँ: पंकज कुमार

परिवहन विशेष न्यूज

पटना, 08 मार्च 2026: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आज पटना के सगुना मोड़ स्थित अंशु मैरिज हॉल में 'महिला उद्यमी सम्मान समारोह' का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन टीम वॉरियर्स और 'केक वर्ल्ड' के संयुक्त तत्वावधान में किया गया, जिसमें बिहार की विभिन्न क्षेत्रों की सफल महिला उद्यमियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के बिहार प्रदेश अध्यक्ष पंकज कुमार ने दीप प्रज्वलित कर समारोह की शुरुआत की। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज की नारी शक्ति केवल घर तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) के माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे रही है।

मुख्य बिंदु:

उद्यमिता को बढ़ावा: श्री पंकज कुमार ने ग्रामीण स्वरोजगार और विशेष रूप से तसर सिल्क उत्पादन व ब्रांडिंग जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना की। पारदर्शिता की अपील: उन्होंने बैंकिंग सेवाओं में बिचौलियों की भूमिका को समाप्त करने और सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे उद्यमियों तक पहुंचाने पर जोर दिया।

प्रशिक्षण केंद्र की योजना: जल्द ही बांका और आसपास के क्षेत्रों में MSME सहायता एवं प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की बात दोहराई गई, जिससे महिला कारीगरों और युवाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाया जा सके।

समारोह के दौरान विभिन्न स्टार्टअप और छोटे उद्योगों से जुड़ी महिलाओं को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 'टीम



वॉरियर्स' और 'केक वर्ल्ड' के प्रतिनिधि सहित समाज के विभिन्न वर्गों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

समारोह का समापन 'नारी शक्ति' के नारों और बिहार को एक अग्रणी उद्यमी राज्य बनाने

के संकल्प के साथ हुआ।

पंकज कुमार प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन, बिहार

रंगों के सरोवर मानो हम इन्दौरी

स्वतंत्र पत्रकार व लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

इंदौर मध्य-प्रदेश में रंग पंचमी की वर्षों पुरानी परंपरा है, जो विश्व प्रसिद्ध है। यह उत्सव रंगों के माध्यम से प्रेम बंटता है। होली के बाद रंग पंचमी पर आज फिर शहर रंगारंग गेर में डूब गया था।

इन्दौर के हृदय स्थल राजवाड़ा पर सुबह से ही रंग गुलाल खेलने मस्ती की टोली पहुंच गई थी। टोरी कारनर से फुल्ले हुए परंपरागत 'गेर' में रंग-गुलाल से पुरा क्षेत्र में कलरफुल वातावरण बन गया था। फिर एक बार शहर का रंगों का उत्सव देखने को मिला। ऐसा लगा कि इन्दौर सही में गजब है। आसमान से रंग बरस रहा था, वहीं पुलिस प्रशासन भी इस बार ज्यादा चुस्त दुरुस्त था। डोन कैमरा से निगरानी और चप्पे चप्पे पर पुलिस तैनात थी। वहीं गडबडी करने वालों को तुरंत पकड़ रही थी। जिससे देखकर वहां पर लाखों की संख्या में उपस्थित धर्म व संस्कृति प्रेमी जनता भी इसके लिए पुलिस प्रशासन के काम की तारीफ कर रही थी और जोर-जोर से ताली भी बजा रही थी।

यातायात व्यवस्था में तैनात जवान भी बहुत बढ़िया व्यवस्था कर रखी थी। सभी जानते हैं कि इन्दौर की यह रंग पंचमी अब सांस्कृतिक धरोहर बन चुकी है, और इसकी अपनी एक अलग पहचान है।

इसलिए इस पर शरारती तत्वों पर निगरानी रखी गई और शोरगुल करने वाले खिलों पर प्रतिबंध लगा रखा था। वहीं डीजे की गाड़ी व बेड बाजे की आवाज भी कम कर रखी थी। जिससे ऐतिहासिक परंपरागत 'गेर' का महत्व: कम नहीं हो क्योंकि अपन सभी इन्दौरी है। जो रंगपंचमी पर 'गेर' निकलीं गई है वहां सौहार्द व भाईचारे की अदभुत मिसाल है इस पर्व का उत्साह उमंगता आज भी उसी प्रकार से कायम है। आधुनिक दौर में आज जिस तरह जवान बच्चे बुजुर्ग महिला वह मातृशक्ति की उपस्थिति इस रंगारंग सांस्कृतिक गेर में रंगपंचमी पर हुई, उसे देखकर ऐसा नहीं लगता की नई पीढ़ी में अपने धर्म संस्कार व संस्कृति छोड़ दी है। आज इस रंग पंचमी पर पूरे देश को सनातन धर्म की परम्परा और समाजिक एकता रंग देखने को मिला। इन्दौर जो नफरत

को भुलाकर रंगों के जरिए एकता को बढ़ावा देता है। इंदौर की यह रंगपंचमी सिर्फ एक रंग खेलने का त्योहार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर की एक अनूठी मिसाल है। देश दुनिया से नफरत मिटें और प्रेम स्नेह व वात्सल्य को बढ़ावा मिले। मनुष्य को हमेशा मिलजुलकर सभी रंगों में डुबकी लगाने की जरूरत है तभी सरोकार का एक अहम भाव हमारे मानस पटल पर आयेगा। रंग की भी हो उसकी एक अपनी अलग पहचान होती है। हमें हमेशा से अपनी दृष्टि में सही गलत का मूल्यांकन करते रहना होगा। जिससे आदमी को आत्मनियता पहचान हो सके। आज रंग पंचमी पर जो गेर निकली वह सचमुच सबसे अलग थी इसे देखने देश-विदेश से लोग इन्दौर आये। सभी रंगों के इस सरोवर में डूब गए। कुछ सालों से इसमें धार्मिकता का अटूट संगम देखने को मिल रहा है इस बार विश्व प्रसिद्ध उज्जैन के महाकाल बाबा की विशाल प्रतिकृति और मंदिर की रचना की गई। वहीं मोर मुकुट बंशीवाले भी रंग-गुलाल उड़ाते हुए दिखाई दिए। और बड़ी बड़ी ट्रैक्टर ट्राली में कम्पसर



मशीनों द्वारा तिरंगे कलर के रंगों को आसमान में ऐसे उड़ता था रहा था, कि मानों तिरंगा लहराया रहा हो। एक और तिरंगा तो जमीं पर भगवा ध्वज मानो राष्ट्रीय एकता व सनातन संस्कृति मिलकर रंग गुलाल उडा रही हो। सबसे स्वच्छ शहर स्वच्छता का महामुख इन्दौर इस वृहद रूप से बड़े रंग गुलाल पानी के बाद वहां फेला कचरा जो जम जाता है। उसे 400 से 500 कर्मचारियों सफाई मित्रों व अधिकारियों के सहयोग से 20 मशीनों द्वारा सफाई तुरंत की जाती है। यहां भी बहुत बड़ी आर्विटी की जाती है। इस राशि का उपयोग शहरों की बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने के लिए किया जाता है। नगर विकास विभाग के अधिकारियों के अनुसार, 15 वें वित्त आयोग की राशि का उपयोग मुख्य रूप से पेयजल व्यवस्था, जल निकासी और अन्य शहरी आधारभूत संरचनाओं के विकास में किया जायेगा। इससे शहरों में नागरिक सुविधाओं की स्थिति

झारखंड में निकाय चुनाव के बाद शहरी विकास की राशि आगमन का मार्ग प्रशस्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के शहरी क्षेत्रों को विकास राशि मिलने का मार्ग अब प्रशस्त हो गया है। झारखंड सरकार द्वारा निकाय चुनाव संपन्न होने के बाद शहरों के विकास के लिए बड़ी राशि मिलने का रास्ता है। राज्य के नगर निगम, नगर परिषद और नगर पंचायतों को 15 वें वित्त आयोग के तहत वर्ष 2021 से 2026 तक की अवधि में करीब 3367 करोड़ रुपये मिलने का प्रावधान है। इसमें से कुछ राशि राज्य को मिली है। लेकिन, राज्य में निकाय चुनाव नहीं होने के कारण आयोग की अनुशंसा पर मिलने वाला अनुदान रुक गया था। वर्तमान में राज्य सरकार का 1600 करोड़ रुपये से अधिक पर दावा है। नये मेयर, अध्यक्ष और पार्षदों के निर्वाचित होने के बाद राज्य सरकार वित्त आयोग की अनुशंसा पर मिलने वाले अनुदान पर दावा पेश करेगी।

राज्य में लंबे समय तक कई शहरी निकायों में निर्वाचित बोर्ड नहीं था और प्रशासकों के माध्यम से कामकाज चल रहा था। इस कारण योजनाओं की प्राथमिकता तय करने और वित्त आयोग की राशि के प्रभावी उपयोग में व्यावहारिक दिक्कतें आ रही थीं। नगर विकास विभाग के अनुसार, अब नये जनप्रतिनिधियों के आने के बाद नगर निकाय अपने क्षेत्रों की जरूरत के अनुसार विकास योजना तैयार करेंगे, इसी के आधार पर वित्त पोषण होगा। झारखंड के 48 नगर निकायों (नगर निगम, नगर परिषद और नगर पंचायत) को वित्त आयोग की सिफारिशों के तहत जनसंख्या, क्षेत्रफल और अन्य मानकों के आधार पर राशि आवंटित की जाती है। इस राशि का उपयोग शहरों की बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने के लिए किया जाता है।

नगर विकास विभाग के अधिकारियों के अनुसार, 15 वें वित्त आयोग की राशि का उपयोग मुख्य रूप से पेयजल व्यवस्था, जल निकासी और अन्य शहरी आधारभूत संरचनाओं के विकास में किया जायेगा। इससे शहरों में नागरिक सुविधाओं की स्थिति



सुधारने में मदद मिलेगी

15 वें वित्त आयोग की गाइडलाइन के अनुसार, इस राशि का एक हिस्सा टाइड फंड के रूप में दिया जाता है। इसका उपयोग पेयजल, स्वच्छता और कचरा प्रबंधन जैसे निर्धारित मदों में ही करना होता है। वहीं, अनटाइड फंड का उपयोग नगर निकाय अपने क्षेत्र की प्राथमिकताओं के अनुसार अन्य विकास कार्यों में कर सकते हैं।

वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर केंद्र सरकार राज्यों को समय-समय पर किस्तों में अनुदान जारी करती है। इसके बाद राज्य सरकार यह राशि नगर निकायों को उपलब्ध कराती है। इसके लिए निकायों को ऑडिट, उपयोगिता प्रमाणपत्र और वित्तीय पारदर्शिता से जुड़े मानकों का पालन करना होता है। इस राशि का सही तरीके से उपयोग होने पर शहरों में जलापूर्ति, सफाई व्यवस्था और कचरा प्रबंधन जैसी मूलभूत सेवाओं में बड़ा सुधार हो सकता है।

फिक्की फ्लो अमृतसर की चैयरपर्सन मोना सिंह ने PRERNA 2.0 अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मेलन में किया प्रतिनिधित्व

अमृतसर 8 मार्च (साहिल बेरी)

CGC यूनिवर्सिटी, मोहाली में PRERNA 2.0 - इंटरनेशनल वीमेन 'स डे कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया, जो महिलाओं के नेतृत्व, उद्यमिता, नवाचार और नीतिगत संवाद को समर्थित एक राष्ट्रीय मंच रहा। यह सम्मेलन विकसित भारत @2047 के दृष्टिकोण के अनुरूप आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति राजेश बिंदल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जिससे इस राष्ट्रीय मंच को विशेष गरिमा प्राप्त हुई। इस कॉन्क्लेव में नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं, उद्यमियों, निवेशकों, इनक्यूबेटरों और शिक्षाविदों ने भाग लिया तथा महिलाओं द्वारा संचालित परिवर्तन को गति देने के लिए संवाद और सहयोग पर चर्चा की। फिक्की फ्लो अमृतसर की चैयरपर्सन मोना सिंह ने इस सम्मेलन में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में भाग लिया और 'Catalysing Women-Led Growth Through Policy, Capital & Collaboration' विषय पर आयोजित पैनल चर्चा में पैनलिस्ट के रूप में अपनी सहभागिता दर्ज



कराई। इस चर्चा में महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों को आगे बढ़ाने के लिए मजबूत नीतिगत ढांचे, पूंजी तक बेहतर पहुंच और विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग को बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया गया। इस सत्र का संचालन डॉ. नैन्सी जुनेजा, संस्थापक - MENTORx ने किया। पैनल में भारतीय सूद (सीनियर रीजनल डायरेक्टर, PHDCCI), पूजा नायर (चैयर, TiE Women

Chandigarh), दीपाली गुलाटी (नेशनल प्रेसिडेंट - स्किल डेवलपमेंट काउंसिल, WICCI) और साक्षी अरोड़ा कत्याल (चैयरपर्सन, CII-IWN) चंडीगढ़ ट्राइसिटी (चैयर) भी शामिल थीं। कॉन्क्लेव में लीडरशिप डायलॉग, स्टार्टअप पिच शोकेस, MSME प्रदर्शनी, इन्वेंशन प्लेटफॉर्म और नीतिगत चर्चाएँ जैसे विभिन्न सत्र

आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य महिला उद्यमियों के लिए मेंटरशिप नेटवर्क को मजबूत करना, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच बढ़ाना और सहयोग के नए अवसर तैयार करना था।

इस सम्मेलन में फिक्की फ्लो अमृतसर की भागीदारी ने महिला नेतृत्व, उद्यमिता और समावेशी आर्थिक विकास पर राष्ट्रीय स्तर की चर्चाओं में संगठन की सक्रिय भूमिका को और सुदृढ़ किया।

